वार्षिक रिपोर्ट

ANNUAL REPORT
2008-2009

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
NEW DELHI

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT

1 अप्रैल, 2008 से 31 मार्च, 2009 तक

1ST APRIL 2008 TO 31ST MARCH 2009

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
वार्षिक प्रतिवेदन
2008-2009

विषय-सूची

संकल्पना			1
संगठन			3
न्यास का निर्माण			4
भावी मानचित्र			5
नई योजनाएं			6
आधुनिकीकरण			7
सारांश			8-9
कलानिधि			10
कार्यक्रम क	:	संदर्भ पुस्तकालय	10
		पाण्डुलिपि पुस्तकालय	12
		संरक्षण प्रयोगशाला	14
कार्यक्रम ख	:	सांस्कृतिक अभिलेखागार	17
		प्रलेखन	18-19
		साँस्कृतिक सायन्त्रिक संचार	20-22
कलाकोश			23
कार्यक्रम क	:	कलातत्त्वकोश	23
कार्यक्रम ख	:	कलामूलशास्त्र	23-27
कार्यक्रम ग	:	कलासमालोचन	28
कार्यक्रम घ	:	क्षेत्र अध्ययन	29
जनपद सम्पदा			31
कार्यक्रम क	:	मानवजाति वणर्नात्मक संग्रह	31
कार्यक्रम ख	:	आदि दृश्य	31
कार्यक्रम ग	:	जीवन शैली अध्ययन	34

कलादर्शन 40

कार्यक्रम क : प्रदर्शनियां 40

कार्यक्रम ख : सार्वजनिक व्याख्यान/चर्चा 42

कार्यक्रम ग : डायस्पोरा सांस्कृतिक कार्यक्रम 43

क्षेत्रीय केन्द्र 44

क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी 44

उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, गुवाहाटी 45

दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, बैंगलोर 45-46

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन 46-50

सूत्रधार 52

कार्यक्रम क : कार्मिक 52

कार्यक्रम ख : आपूर्ति एवं सेवाएँ 52

कार्यक्रम ग : भवन निर्माण परियोजनाएं 52-55

अनुबन्ध

I : इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य (31.03.2009 को) 56-57

II : केन्द्र की कार्यकारिणी समिति के सदस्य (31.03.2009 को) 58

III : 1 अप्रैल, 2008 से 31 मार्च, 2009 तक इ.गा.रा.क. केन्द्र में आयोजित प्रदर्शनियाँ 59-60

IV : 1 अप्रैल, 2008 से 31 मार्च, 2009 तक इ.गा.रा.क. केन्द्र में आयोजित व्याख्यान 61-63

V : 1 अप्रैल, 2008 से 31 मार्च, 2009 के दौरान केन्द्र के प्रकाशन 64-65

VI : केन्द्र के अधिकारियों की सूची एवं केन्द्र के वरिष्ठ/कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं की सूची (31.03.2009 को) 66-68

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
वार्षिक विवरण- 2008-2009

संकल्पना

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (इ.गाँ.रा.क.के.) श्रीमती इन्दिरा गाँधी की स्मृति में स्थापित एक ऐसी स्वायत्त संस्था के रूप में परिकल्पित है, जिसमें सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप अपना एक पृथक् अस्तित्व रखते हुए भी, पारस्परिक अन्योन्याश्रय की स्थिति में प्रकृति, सामाजिक-संरचना और ब्रह्माण्ड-व्यवस्था के साथ सम्बद्ध हो।

कला विषयक यह दृष्टिकोण मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखण्ड एवं अपरिहार्य रूप से सम्बद्ध है। यह श्रीमती गाँधी की इस मान्यता पर आधारित है कि वैयक्तिक एवं सामाजिक स्तर पर मनुष्य के अन्तर्भूत गुणों के समुचित विकास में, कलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह दृष्टिकोण एक ऐसी विश्वदृष्टि की भावना में समाविष्ट है जो अपने स्वरूप में समग्र है, भारतीय परम्परा में सर्वत्र मुखरित है और महात्मा गाँधी एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर प्रभृति आधुनिक मनीषियों ने जिस पर बल दिया है।

यहाँ कलाओं को बहुत व्यापक रूप में देखा गया है, जिसमें शामिल हैं- लिखित एवं मौखिक रूप में उपलब्ध सृजनात्मक एवं समीक्षात्मक साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और लेखाचित्र से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, फोटोग्राफी और फिल्म जैसी दृश्य कलाएँ, अपने व्यापकतम अर्थों में संगीत, नृत्य एवं नाट्य जैसी प्रदर्शनात्मक कलाओं तथा मेलों, उत्सवों एवं जीवन शैली में विद्यमान वह सभी कुछ जिसे किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता हो। प्रारम्भ में केन्द्र ने अपना ध्यान भारत पर ही केन्द्रित किया है पर भविष्य में इसके क्षेत्र का प्रसार अन्य सभ्यताओं एवं संस्कृतियों तक हो जाएगा । अनुसन्धान, प्रकाशन, प्रशिक्षण, सृजनात्मक कार्यकलाप तथा प्रदर्शन के विविध कार्यक्रमों के माध्यम से केन्द्र, कलाओं को प्राकृतिक तथा मानवीय परिवेश के सन्दर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयास करेगा। अपने समस्त कार्यकलाप में केन्द्र का आधारभूत दृष्टिकोण बहुविषयक एवं अन्तर्विषयक होगा। इस केन्द्र का उद्देश्य कला से संबंधित क्षेत्रों में समान विश्व विचारों की सरमाविता करते हुए भारत और उसके पड़ोसी देशों के बीच तथा भारत और विश्व के समुदायों के बीच समन्वय, छानबीन, अध्ययन करना और संवाद को पुर्नजीवित करना है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कलाओं के विषय में अधिगम की विलक्षणता इस तथ्य में परिलक्षित है, कि यह लोक और शास्त्रीय, मौखिक और श्रुत, लिखित और उच्चरित और प्राचीन और आधुनिक को एक परिपूर्णता में देखता है। यहाँ विभिन्न क्षेत्रों के बीच संवाद और अविच्छिन्नता पर बल दिया जाता है जो अन्ततः मनुष्य को मनुष्य के साथ और मनु य को प्रकृति के सहजीवन से जोड़ता है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अपने प्रकाशनों, अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय विचारगोष्ठियों, सम्मेलनों, प्रदर्शनियों और व्याख्यान मालाओं द्वारा अपने शैक्षणिक और अनुसंधान कार्य की अभिव्यक्ति करता है। स्कूल और अन्य शिक्षा संस्थान इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रसार कार्यक्रमों की परिधि में आते हैं। बहु विषयक भौगोलिक अध्ययनों द्वारा यह अनुसंधान को पूर्ण बनाता है ताकि विकास प्रक्रिया में सांस्कृतिक निवेशों को उत्प्रेरक किया जा सके।

केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं-

(1) लिखित, मौखिक एवं दृश्य सामग्री के विशेष परिप्रेक्ष्य में, कलाओं के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना।

(2) कला,मानविकी, और सामान्य सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित सन्दर्भ ग्रन्थों, शब्दावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों आदि के अनुसन्धान एवं प्रकाशन का कार्य

(3) सुव्यवस्थित, वैज्ञानिक अध्ययन एवं सचल प्रदर्शनों के आयोजन हेतु क्रोड संग्रह के साथ-साथ जनजातीय एवं लोक कला प्रभाग स्थापित करना।

(4) प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के क्षेत्र में तथा उनके बीच परस्पर सृजनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद तथा विचार -विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराना।

(5) दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी वर्तमान विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना ताकि बौद्धिक समझबूझ के उस अन्तर को दूर किया जा सके, जो अक्सर एक तरफ आधुनिक विज्ञान और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति, जिसमें परम्परागत कला-कौशल तथा ज्ञान शामिल है, के बीच उत्पन्न हो जाता है।

(6) भारतीय प्रकृति के अनुरूप अनुसन्धान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन हेतु आदर्श तैयार करना।

(7) विभिन्न सामाजिक स्तरों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के जटिल ताने-बाने के रचनात्मक एवं गतिशील तत्त्वों की व्याख्या करना।

(8) भारत और विश्व के अन्य भागों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों के प्रति जागरूकता एवं संवेदनशीलता को प्रोत्साहन देना।

(9) कला और संस्कृति के अन्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्रों के साथ संचार-तंत्र का विकास करना, और कला, मानविकी और सांस्कृतिक धरोहर से सम्बद्ध शोध करने और उनको मान्यता प्रदान करवाने हेतु भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों एवं अन्य उच्च शिक्षण संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित करना।

संगठन

अपनी संकल्पनात्मक योजना में उल्लिखित उद्देश्यों तथा अपने मुख्य लक्ष्यों को पूरा करने हेतु केन्द्र, संरचनात्मक दृष्टि से स्वायत्त, किन्तु प्रक्रियात्मक रूप से सम्बद्ध, पाँच संभागों के माध्यम से कार्य करता है।

कलानिधि प्रभाग में इसमें (क) मानविकी विषयों तथा कलाओं में अनुसंधान हेतु प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करने के लिए, बहुविध संग्रहों से युक्त एक सांस्कृतिक-सन्दर्भ पुस्तकालय है, जिसमें पुस्तकें, स्लाइड्स, माइक्रोफिल्म्स, छायाचित्र, श्रव्य-दृश्य सामग्री, संरक्षण प्रयोगशाला तथा (ग) सांस्कृतिक अभिलेखागार सम्मिलित हैं।

कलाकोश प्रभाग आधारभूत अनुसंधान का कार्य करता है और बहु-स्तरीय और बहु विषयक आयामों और संयोगात्मक संबंधों में बौद्धिक परम्पराओं का अन्वेषण करता है। अनुसंधान और प्रकाशन प्रभाग के नाते यह कलाओं को सांस्कृतिक प्रणाली की परिपूर्ण संरचना के अंगरूप में स्थपित करता है और शाब्दिक को मौखिक और दृश्य को श्रुत, जीवन को कलाओं और सिद्धांत को व्यवहार से जोड़ता है ।

इसके दीर्घावधिक कार्यक्रमों में, (क) कलातत्त्वकोश कला की आधारभूत संकल्पनाओं का एक कोश तथा मूलभूत तकनीकी शब्दों का संग्रह और अन्तर्विषयक शब्दावलियाँ, (ख) कलामूलशास्त्र भारतीय कलाओं के आधारभूत ग्रन्थों की शृंखला, (ग) कलासमालोचना भारतीय कला-विषयक, समीक्षात्मक साहित्य के पुनर्मुद्रण की शृंखला, (घ) भारतीय कलाओं का एक बहुखण्डीय विश्वकोश, तथा (ङ) क्षेत्र अध्ययन परक कार्यक्रम, सम्मिलित हैं।

जनसम्पदा प्रभाग कलाकोश के कार्यक्रमों का परिपूरक है। इसका केन्द्र-बिन्दु ग्रामीण और लघु समाजों की समृद्ध रंगबिरंगी विरासत का अध्ययन या इसकी गतिविधियाँ लोकपरम्परा एवं क्षेत्रसम्पदा नामक जीवनशैली अध्ययन परक कार्यक्रमों में विभक्त हैं। लोकपरम्परा में समुदाय-विशेष का अध्ययन किया जाता है तथा क्षेत्रसम्पदा में एक क्षेत्र विशेष का। जनपद-सम्पदा यह प्रभाग (क) लोक एवं जनजातीय कलाओं और शिल्पों से संबंधित महत्वपूर्ण सामग्री का प्रलेखन एवं संग्रहण किया है (ख) बहुविध संचार माध्यमों द्वारा प्रस्तुतियाँ की हैं, (ग) भारतीय पर्यावरणपरक, कृषिपरक, सामाजिक आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक आयामों के ताने-बाने के वैकल्पिक मॉडल तैयार करने हेतु जनजातीय समुदायों की बहुविषयक जीवन-शैली के अध्ययन की व्यवस्था की हैं।

कलादर्शन प्रभाग कला और संस्कृति के एकीकृत विषयों तथा संकल्पनाओं पर अन्तर्विषय संगोष्ठियों, प्रदर्शनियों एवं प्रस्तुतियों के लिए एक मंच अपलब्ध कराता है। बच्चों के लिए कार्यक्रम, बालजगत, इस प्रभाग के कार्यक्रमों के अन्तर्गत आता है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के दृश्य और श्रव्य रूपों में अनुसंधान का प्रचार करते हुए यह भारत और विश्व के बीच आदान-प्रदान का मार्ग प्रशस्त करता है।

कलानिधि एवं कलाकोश अपना ध्यान मुख्यतः बहुविध मूल एवं आनुषंगिक सामग्री के संग्रह पर केन्द्रित करते हैं। ये इसके लिए आधारभूत संकल्पनाओं की खोज करते हैं, आकार-आकृति के सिद्धान्तों का पता लगाते हैं और पारिभाषिक शब्दावलियों का स्पष्टीकरण प्रस्तुत करते हैं। यह कार्य वे सिद्धान्त और पाठ (शास्त्र) और बौद्धिक चर्चा (विमर्श) एवं निर्वचन (मार्ग)के स्तर पर इनकी व्याख्या के रूप में करते हैं। जनपद-सम्पदा एवं कलादर्शन, लोक, देश एवं जन के स्तर पर अभिव्यक्ति, प्रक्रिया, जीवन कार्यकलाप तथा जीवन शैली और मौखिक परम्पराओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। कुल मिलाकर, चारों संभागों के कार्यक्रम कलाओं को, जीवन एवं अन्य कलेतर अनुशासनों से उनके सम्बन्ध को, वास्तविक सन्दर्भों में प्रस्तुत करते हैं। सभी संभागों की अनुसन्धान, कार्यक्रम-निर्माण एवं फलावाप्ति की प्रविधियाँ समान हैं। वैसे, हर संभाग का कार्य, अन्य संभागों के कार्यक्रमों का पूरक है।

सांस्कृतिक सांयन्त्रिक संचार (सी आई एल) की स्थापना वर्ष 1994 में यूएनडीपी की सहायता से हुई। यह एक विश्व-स्तर के प्रलेखन एकक के रूप में उभर कर सामने आया है। यह दर्शाता है कि मानव और मानवेतर, जड़ तथा चेतन समुदायों में विद्यमान जीवन और पर्यावरण के प्रबन्धन के लिए संस्कृति की समग्र एवं समेकित संकल्पना को स्थायी नीति का केन्द्र बनाकर कैसे सांस्कृतिक धरोहर का आभासीय पुनःसृजन किया जा सकता है। दुर्लभ पांडुलिपियां, पुस्तुकों, फोटोग्राफ्स, स्लाइड्स और केवल इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के ही दृश्य-श्रव्य संग्रहों के लिए ही नहीं बल्कि संस्कृति विभाग में कार्यरत अन्य संगठनों के संग्रहों के लिए डिजिटाइज़ेशन लिए भी केन्द्र बिन्दु के रूप में काम करता है।

सूत्रधार संभाग अन्य सभी संभागों को प्रशासनिक प्रबन्धकीय और संगठनात्मक सहायता एवं सेवाएं उपलब्ध कराता है।

न्यास का निर्माण

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के कला विभाग के संकल्प संख्या एफ-16-7/86-कला, दिनांक 19 मार्च, 1987 के अनुसार, 24 मार्च,1987 को नई दिल्ली में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला

केन्द्र न्यास का विधिवत् गठन एवं पंजीकरण किया गया। प्रारम्भ में एक सात सदस्यीय न्यास स्थापित किया गया था जिसका समय-समय पर पुनर्गठन होता रहा।

वर्तमान न्यास 17 मई, 2007 को मिसिल सं० एफ 16-23 /2005-अका० के द्वारा पुनगर्ठित किया गया और न्यास के अध्यक्ष क चुनाव 19 जून, 2007 को हुआ । उसी दिन कार्यकारिणी समिति का गठन भी हुआ । आदेश संख्या 16-26/2005 अकादमी (दिनाङ्क 20 फरवरी, 2009)के अनुसार 3 नए न्यासी और मनोनीत किए गए । 31 मार्च, 2009 को कार्यकारिणी समिति के सदस्यों के नामों की सूचियाँ अनुबन्ध 1 एवं अनुबन्ध 2 पर हैं ।

भावी मानचित्र

कलाओं के क्षेत्र में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त संस्थान के रूप में उभर कर आया है। इसने एक व्यापक कार्यक्रम को क्रियान्वित किया है जिसमें आयाम एवं क्षेत्र निरपेक्ष रूप से कलात्मक रूपों का समावेश किया गया है इनमें से प्रत्येक रचनात्मक अनुभव के समग्र क्षेत्र को पूर्णतया उद्घाटित करने में सक्षम एवं समर्थ है।

अपने संविधान में उल्लिखित प्रतिष्ठित अधिगम को जारी रखते हुए, इ०गा०रा०क०केन्द्र 11 वीं योजना के दौरान व्यक्ति के विखंडन के स्थान पर एकीकरण पर ध्यान संकेन्द्रित करेगा और अपनी कला और जीवन के सार्विक भविष्य-निरूपण में व्यक्ति की संस्थागत, व्यावसायिक और सामाजिक भूमिकाओं में सामंजस्य स्थापित करेगा। कलाओं के मुख्य स्रोत के रूप में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सब कार्यकलाप इस प्रकार तैयार किए गए हैं जिससे कलाओं पर मुख्य स्रोत सूचना की पहचान सर्वेक्षण, सूचीनिर्माण, भण्डारण, पुनः प्राप्ति, विश्लेषण, अनुसंधान, प्रकाशन और प्रसार किया जा सके। इसकी सम्पत्ति में श्रव्य दृश्य और लिपिबद्ध सामग्री का एक बड़ा अभिलेखागार है जो अमूर्त धरोहर के बहुत से विश्व धरोहर प्रेलेखों के लिए संकेत प्रस्तुत करता है। यह वैदिक एवं अन्य पाठ्यपरम्पराओं सहित मैत्री और सद्भाव की विभिन्न परम्पराओं तथा समुदायों की संस्कृतिकमूलक जीवनोपयोगी नीतियों के दार्शनिक, औपचारिक तथा व्यावहारिक आयामों का अध्ययन करेगा।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संग्रह हमारी परम्परा में विद्यमान अपूर्ण, अथवा अनारब्ध एवं व्यापक वर्धमान स्रोतों को द्योतित करते हैं। मूर्त और अमूर्त धरोहर के बीच सेतु निर्माण का अपना उद्देश्य प्राप्त करने के लिए, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र नैसर्गिक पर्यावरणीय जीवन चक्रों और मानव सामाजिक कार्यों के संदर्भ में वर्तमान प्रलेखन में जातिगत और लोक कला परम्पराओं के बड़े संग्रहों को जोड़ने का विचार रखता है। अतः इसका सुझाव है कि अपने प्रलेखन की परियोजनाओं को जारी रखा जाए जो सूचना के मात्र संगहण तक सीमित न रहते हुए परम्पराओं को

समूल जीवित बनाए रखने वाली और जीवन बढ़ाने वाली विधाओं के पुनः पूर्ति और पुनर्जीवित करने के उद्देश्यों को अपनाया जाए। वर्तमान संदर्भों में परम्पराओं के पुनः एकत्र करने और विचार और क्रिया के रूप में पुनरावर्तन और अनुनाद के साझे क्षेत्र का निर्माण किया जाए, जिसे पड़ोस में और विश्व भर में विभिन्न समुदायों, क्षेत्रों सामाजिक स्तरों पर और देशों द्वारा सहभाजित किया जाएगा और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कार्यक्रमों के माध्यम से इस पर बल दिया जाएगा।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का मिशन होगा कि पृथ्वी पर मनुष्य और अन्य जातियों के जीवन और उद्धार के लिए भारतीय संस्कृति की अमूर्त धरोहर की प्रासंगिकता को स्थापित किया जाए। यह प्रयास होगा कि इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के घोषणा विलेख को पूरा किया जाए जो विगत काल को साथ वहन करने की बात करता है, किसी बोझ के रूप में नहीं बल्कि वर्तमान संदर्भ में इस धरोहर के जीवन को बढ़ाने वाले तत्वों के पुनरावर्तन के और एक जीवित धरोहर के रूप में, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, जीवन, शैलियों, मिथकों, वार्षिक चक्रों, परिस्थिति विज्ञान, मानव और प्राकृतिक वातावरण और परम्परागत ज्ञान प्रणालियों के संदर्भ में एक समेकित अन्तः शास्त्रीय उपागम के माध्यम से कलाओं के योजनाबद्ध वैज्ञानिक अध्ययन के प्रति अपने आपको समर्पित करना चाहता है।

नई योजनाएं

11 वीं पञ्चवर्षीय योजना के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की योजनाओं में अल्पावधिक और दीर्घावधिक ऐसे कार्यक्रमों को शामिल किया गया है जो चार शैक्षणिक प्रभागों के कार्यों को एकीकृत करेंगे और साथ ही उनकी अपनी अस्मिता यथावत् रहेगी। कलाओं के मुख्य स्रोत केन्द्र के रूप में काम करने के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र कलाओं के बारे में आरंभिक स्रोत सूचना की पहचान, सूचीबद्धता, सर्वेक्षण, भण्डारण, पुनःप्राप्ति, विश्लेषण, अनुसंधान, प्रकाशन और प्रसार करता रहेगा।

11 वीं पञ्चवर्षीय योजना के दौरान निम्निलिखित नई परियोजनाओं को क्रियान्वित किया जाएगा :

1. बहुविज्ञानीय अनुसन्धान को बढ़ावा देना और विभिन्न कलाओं के बीच आलोचनात्मक संवाद स्थपित करना ।
2. अस्मिता के विभिन्न स्तर तथा कलाओं में उनकी अभिव्यक्ति ।
3. भाषा और सांस्कृतिक वैविध्य ।
4. ज्ञान परम्परा, परिस्थिति-विज्ञान, संसाधन प्रबन्धन और धारणीय विकास, धार्मिक अस्मिता, परम्पराओं और मिश्र संस्कृतियों का संगम, अन्तः सांस्कृतिक संवाद।

नारीवाद : भारतीय कला और संस्कृति में महिलाओं का योगदान

1. संसाधन संवर्धन और आधुनिकीकरण
2. सांस्कृतिक मानचित्र
3. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में कार्यालय साधनों का आधुनिकीकरण
3. ज्ञान बढ़ाने के लिए अध्येतावृत्ति

आधुनिकीकरण

11 वीं योजना के दौरान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र माइक्रोफिल्म, माइक्रोफिश, सीडीआरओएम, डीवीडी, टेप्स, फोटोग्राफ, स्लाइडों, फिल्म वीडियो आदि विभिन्न मीडिया में स्रोत सामग्रियों के पुर्नोत्पादन को बढ़ाएगा ।

देश के सांस्कृतिक स्रोतों के डिजिटाइज़ेशन में अग्र स्थिति बनाए रखने सामग्रियों आटीफैक्ट, फिल्मों, फोटोग्राफों टेपों आदि के संरक्षण, भण्डारण, सूचना की पुनः प्राप्ति के लिए अपने उपभोक्ताओं को नवीनतम उपस्कर प्रदान करने के लिए यह प्रौद्योगिकी का उन्नयन करेगा।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने अपने नए भवन कलानिधि और कलाकोश सहभाजित स्रोत भवन 'क' को चालू कर दिया है जहाँ कलानिधि, कलाकोश, जनपद सम्पदा, सांस्कृतिक सायंत्रिक संचार और राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन आदि शैक्षणिक संभाग स्थित है। नं. 5 राजेन्द्र प्रसाद मार्ग भवन में साथ ही साथ गैस्ट रूम, केफेटेरिया, रसोईघर, सेवा पेंट्रीज, स्टाफ केन्टीन और कांफ्रेंस कक्षों की सुविधा उपलब्ध करा दी गई है लेकिन उन्हें अभी तक चालू नहीं किया गया। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा काम पूरा कर देने के बाद इन्हें चालू कर दिया जाएगा।

इस भवन का कुल निर्मित क्षेत्र लगभग 27500 वर्ग मीटर है। भवन के डिजाइन और ढांचे के अनुरूप कार्यालय को फर्नीचर और उपस्कर से सज्जित करने के लिए, यह सुझाव है कि वर्क स्टेशन स्थापित किए जाएं, सूचना प्रौद्योगिकी यंत्र और संयन्त्र उपलब्ध कराए जाएं और कार्यालय स्वचलन उपस्करों की खरीद की जाए ।

1 अप्रैल, 2008 से 31मार्च, 2009 की अवधि की वार्षिक रिपोर्ट

सारांश

उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सतत् प्रयत्न करते हुए इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने आलोच्य वर्ष में कई विशाल कार्यक्रम आयोजित किए जिनमें जनता की महत्त्वपूर्ण भागीदारी रही। गढ़वाल, उत्तर-पूर्व तथा कश्मीर आदि क्षेत्रों को समर्पित तीन उत्सव आयोजित किए गए । ये सभी उत्सव सभी तरह के कार्यक्रमों से परिपूर्ण थे जिनमें संगोष्ठियाँ, विशेष व्याख्यान, फिल्म शो, हस्तकला बाज़ार, भोज्य पदार्थ बिक्री पटल, प्रदर्शनियाँ एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्मिलित थे । इन सभी कार्यक्रमों में अनेक विश्वविद्यालयों तथा शैक्षणिक संस्थानों के विभिन्न अध्ययन क्षेत्रों के सदस्यों तथा कश्मीर, गढ़वाल एवं उत्तरपूर्व क्षेत्रों के दिल्ली में रह रहे हजारों व्यक्तियों एवं कलाकारों ने भाग लिया ।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने संयुक्त राज्य अमेरिका से डॉ० आनन्द के० कुमारस्वामी संग्रह से सम्बन्धित सामग्री प्राप्त की । इनमें डॉ० कुमारस्वामी के संग्रह की पुस्तकें, पत्र, फोटोग्राफ्स, स्लाइड्स एवं अन्य कला सामग्री थी । इन वस्तुओं के अर्जन ने केन्द्र के संग्रहालय में वर्षों से अर्जित डॉ० कुमारस्वामी से सम्बन्धित सामग्री की श्रीवृद्धि की ।

अर्न्तसांस्कृतिक अध्ययन इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्ययनों का एक प्रमुख क्षेत्र है। इस क्षेत्र में, बदलते वैश्विक परिदृश्य को देखते हुए एक नई अर्न्तदृष्टि लाने के लिए इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने *न्यू पर्सपेक्टिव्ज़ ऑन इण्टर कल्चरल स्टडीज़* शीर्षक से एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें विद्वानों, इतिहासकारों, शैक्षणिकों तथा राजदूतों ने भाग लिया । इसका आयोजन *इंस्टीट्यूट ऑफ चाइनीज़ स्टडीज़* के सहयोग से किया गया था ।

धार्मिक अस्मिताओं, परम्पराओं का संगम एवं संयुक्त सांस्कृतियाँ केन्द्र के 11वीं योजना में तीन नई परियोजनाएँ हैं । पिछले दो वर्षों की भाँति इस वर्ष भी तीव्र गति से लुप्त होते हुए चार बैत नामक काव्य परम्परा पर चार दिवसीय प्रलेखन एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

आलोच्य वर्ष में केन्द्र का सांस्कृतिक सायंत्रिक संचार एकक नेशनल मिशन ऑन मोनुमेंट्स एण्ड एन्टीक्युटिज़ के लिए एक महत्त्वपूर्ण परियोजना में कार्यरत है। यह स्मारकों, वस्तुओं, भवनों तथा स्थानों पर सूचनाओं को प्राप्त कर उनका डिजिटीकरण कर रहा है। अब तक यह 19249 फार्म्स (60,658 पृष्ठों), को डिजिटाइज़ कर चुका है, जिनमें अधिकांश फोटोग्राफ्स हैं । केन्द्र के इस एकक ने राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के लिए पाण्डुलिपियों के डिजिटाइज़ेशन का कार्य चालू रखा ।

पिछले दस वर्षों के निरन्तर शैक्षणिक शोध के परिणामस्वरूप इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने इस वर्ष 10 पुस्तकें प्रकाशित की । इन पुस्तकों के नाम तथा विस्तृत जानकारी आगामी पृष्ठों में उपलब्ध हैं।

शैलकला के क्षेत्र में, केन्द्र ने उल्लेखनीय प्रगति की । कई घण्टों का ऑडियो-विडियो तैयार किया, हजारों फोटोग्राफ्स लिए गए तथा उनके स्लाइड्स बनाए गए जिनकी कैटलॉगिंग की जा रही है जो जनता के संदर्भ के लिए उपलब्ध होगा।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने देश-विदेश के शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संस्थानों के साथ सहयोगात्मक कार्यक्रम किया तथा शोध एवं छात्रवृत्ति के लिए नेटवर्क. तैयार किया । इस कार्यक्रम के परिणाम स्वरुप इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने अनेकों संयुक्त परियोजनाएँ तथा सामग्रियाँ अर्जित की ।

केन्द्र ने जाधवपुर विश्वविद्यालय से डाटा के साथ 10,000 प्रतिरूपों के डीवीडी प्राप्त किए । इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने दिल्ली इण्टरनेशनल आर्ट फेस्टिवल के सहयोग से *रंग-ए-कसब* नामक लोक मेला प्रस्तुत किया । इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं दस्तकारों ने *वसंत उत्सव* प्रस्तुत किया । सहयोगात्मक कार्यक्रम के अन्तर्गत, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा ने नोबल पुरस्कार विजेता ओर्हम पामुक के कार्यों पर आधारित *मैं इस्तांबुल हूँ* शीर्षक से नाटक प्रस्तुत किया । केन्द्र ने इण्डियन कौंसिल फॉर कल्चरल रिलेशन (आईसीसीआर) के सहयोग से अनेकों प्रदर्शनियाँ भी आयोजित की ।

एक अभूतपूर्व प्रयास में, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने आदिवासी कलाकारों के लिए नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन के सहयोग से एक पंद्रह दिवसीय एनिमेशन कार्यशाला का आयोजन किया । इस कार्यशाला के दौरान कलाकारों ने अपनी नैसर्गिक प्रतिभा को अपने व्यवसायिक कार्यों में उपयोग करने की कला सीखी। उन्होंने अपनी लोक कथाओं से सजीव कहानियाँ बनाई तथा इन्हें प्रदर्शनी के रूप में प्रस्तुत किया गया ।

केन्द्र की 1,अप्रैल, 2008 से 31 मार्च, 2009 के कार्यकलापों की एक विस्तृत एवं विभागानुसार रिपोर्ट निम्नलिखित है:-

कलानिधि प्रभाग

कलानिधि- एक राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डाटा बैंक के मुख्य घटक हैं-मुद्रित संग्रहों का एक उत्कृष्ट संदर्भ पुस्तकालय, माइक्रोफिल्मों/माइक्रोफिशेज का विशाल संग्रह स्लाइडों का एक विशाल संग्रह, सांस्कृतिक अभिलेखागार एवं भारत, दक्षिण एशिया एवं पश्चिम एशिया के पुरातत्त्व, मानवविज्ञान, इतिहास, दर्शन, साहित्य, भाषा आदि का एक सुसज्जित श्रव्य/दृश्य एवं फोटो प्रलेखन/कलानिधि का मूल उद्देश्य अन्तर्विभागों जैसे कलाकोश एवं जनपद सम्पदा में सतत् शोध कार्यों के लिए प्रमुख सूचना/ज्ञान के स्त्रोत केन्द्र के रूप में सहायता प्रदान करना तथा सांस्कृतिक सायन्त्रिक संचार एवं कलादर्शन के तकनीकी सूचना सम्बन्धित आवश्यकताओं को पूरा करना एवं साथ-साथ भारत तथा विदेशों में सरकारी एवं गैर सरकारी शैक्षणिक संस्थानों के शोधकर्त्ताओं को सहायता प्रदान करना है। कलानिधि के संग्रह, देशी तथा विदेशी अनेंक भाषाओं में हैं। इसमें अमुद्रित एवं मुद्रित स्त्रोत वस्तुओं की संख्या, 2.4 लाख से अधिक है।

कार्यक्रम क

संदर्भ पुस्तकालय

कलानिधि संदर्भ पुस्तकालय में मानविकी और कलाओं के व्यापक क्षेत्रों में एक विशाल संग्रह है। इसमें संस्कृत, पालि, फारसी और अरबी की अप्रकाशित पाण्डुलिपियों के अनेक माइक्रोफिश, माइक्रोफिल्म एवं फोटोग्राफ्स तथा पुरातत्व, दर्शन, धार्मिक और परम्परागत अध्ययन, इतिहास और मानवशास्त्र, कला और साहित्य और लोक, ग्रामीण और समुदाय अध्ययन पर बहुविध रिप्रोग्राफ्स उपलब्ध हैं ।

मुद्रित सामग्री

अर्जन

इस वर्ष क्रय किए गए संग्रहों में 3774 खण्ड जोड़े गए । इसमें 2875 पुस्तकें उत्तर-पूर्व पर 244 पुस्तकें दक्षिण पूर्व एशिया एवं मध्य एशिया पर सम्मिलित हैं। 450 खण्ड सामान्य उपहार स्वरूप प्राप्त संग्रहों में जोड़े गए । इसके अतिरिक्त डॉ० कपिला वात्स्यायन से प्राप्त 1141 पुस्तकें के०वी० संग्रह में जोड़ी गईं।

संदर्भ पुस्तकालय में कुल मुद्रित पुस्तकों की संख्या वर्ष के अन्त तक 1,42,900 हो गए ।

दुर्लभ पुस्तक संग्रह

दुर्लभ पुस्तकों का अर्जन पुस्तकालय का एक विशेष लक्षण है। इसने 18वीं एवं 19वीं शताब्दी में प्रकाशित पुस्तकों का अर्जन किया है। इन संग्रहों का डिजिटाइज़ेशन किया जा रहा है ताकि इन पुस्तकों को उठाने-रखने का काम कम से कम किया जा सके । समय-समय पर केन्द्र द्वारा इन पुस्तकों के

आधार पर प्रदर्शनी भी आयोजित की जाती है। इन दुर्लभ पुस्तक संग्रहों के लगभग 800,000 पृष्ठों का डिजिटीकरण किया जा चुका है । कुछ डिजिटीकृत पुस्तकों को संदर्भ पुस्तकालय में लगाए गए डी-स्पेस डिजिटल लाइब्रेरी सॉफ्टवेयर पर अपलोड किया गया। जाधवपुर विश्वविद्यालय के साथ सहयोगात्मक परियोजना के अन्तर्गत 10,000 डिजिटल प्रतिरूप तथा दो विडियो जोड़े गए ।

व्यक्तिगत संग्रह

वरिष्ठ विद्वानों एवं कलाकारों के व्यक्तिगत संग्रह एकत्रित करना, पुस्तकालय का एक विशिष्ट प्रकार्य है। पुस्तकालय में श्री सुनीति कुमार चटर्जी, श्री हजारी प्रसाद दिवेदी, श्री ठाकुर जयदेव सिंह, श्री कृष्ण कृपलानी, श्री महेश्वर नियोग, श्री नारायण मेनन, श्री देव मुरारका, श्री लांस डेन, श्री हीरा मानक एवं डॉ० कपिला वात्स्यायन से अर्जित या उपहार स्वरूप प्राप्त संग्रह मौजूद है ।

पत्रिकाएँ

पिछले वर्ष की भांति पुस्तकालय इस वर्ष भी शैक्षणिक एवं तकनीकी पत्रिकाएँ मँगवाई जातीं रहीं । 214 पत्रिकाएँ मँगवाई जाती है। उनके विषय हैं- मानवशास्त्र, पुरातत्त्व, कला, ग्रन्थ विज्ञान पुस्तक समीक्षा, कम्प्यूटर और सूचना विज्ञान, संरक्षण, अभिनय कलाएँ, लोक साहित्य, इतिहास, मानविकी, भाषा विज्ञान, साहित्य संग्रहालय अध्ययन, मुद्राशास्त्र, प्राच्य अध्ययन, दर्शन शास्त्र, पुत्तल कला, धर्म, सामाजिक विज्ञान, थिएटर एवं क्षेत्र अध्ययन।

पत्रिकाओं के पुराने खण्डों की प्राप्ति

कलानिधि संदर्भ पुस्तकालय ने पत्रिका विभाग को सुदृढ़ बनाने के लिए 105 शीर्षकों के सजिल्द खण्ड प्राप्त किए। अब शोध कर्ताओं के लिए 3561 जिल्दबन्द पत्रिकाओं के खण्ड उपलब्ध हैं।

विषय सूचीकरण तथा एब्स्ट्रैक्टिंग डेटाबेस का निर्माण

आलोच्य वर्ष में एब्सट्रैक्टिंग एवं इण्डेक्सिंग डेटाबेस के निर्माण के लिए एक नई परियोजना आरम्भ की गई जिसमें पुस्तकालय में आने वाली भारतीय पत्रिकाओं को लिया जाएगा। इस परियोजना के अन्तर्गत सितम्बर, 2008 से मार्च 2009 की अवधि में लिबसिस डाटा बेस में लगभग 5000 प्रविष्टियाँ की गईं।

इसके अतिरिक्त आलोच्य वर्ष में, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पुस्तकालय द्वारा खरीदे गए 1112 पुरानी पत्रिकाओं की भी प्रविष्टियाँ ऑन लाइन डेटाबेस में की गई ।

इलेक्ट्रॉनिक डेटा बेस

उपयोगकर्ताओं के उपयोग हेतु संदर्भ पुस्तकालय निम्नलिखित इलेक्टॉनिक डेटाबेस का ग्राहक बना :-

1. इ०बी०एस०सी०ओ० ह्यूमैनिटीज़ इण्टरनेशनल कम्पीट
2. जे-गेट आर्ट एण्ड ह्यूमैनिटीज़
3. विल्सन आर्ट इण्डेक्स एण्ड ऐब्स्ट्रेक्ट
4. जे०एस०टी०ओ०आर

यह डेटाबेस सभी उपयोगकर्त्ताओं के लिए उपलब्ध है। इन डेटाबेस तक आई०पी०आधारित पहुँच आई०जी०एन०सी०ए० के सभी प्रभागों को लोकल एरिया नेटवर्किंग(लॉन) के माध्यम से उपलब्ध है।

ग्रन्थ सूचियाँ

एबीआईए परियोजना

एबीआईए भारतीय पुरातत्व की टीकाकृत ग्रन्थ सूची है जिसे वर्ष 1926-73 के दौरान केन इंस्टीट्यूट, लीडन द्वारा प्रकाशित किया गया था। जब इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट एशियन स्टडीज (आईआईएएस) लीडन ने इस ग्रन्थसूची को बनाने का प्रस्ताव दिया तो वर्ष 1996 में इसका आरंभ किया गया। नए रूपांतरण को एबीआईए साउथ और साउथ ईस्ट एशियन आर्ट और पुरातत्व इन्डेक्स (आईबीआईए इन्डेक्स) कहते हैं। आईआईएएस लीडन ने इस अन्तर्राष्ट्रीय परियोजना को आरंभ किया ताकि ग्रन्थ सूचनी इलैक्ट्रानिक ऑनलाइन डेटाबेस को संकलित किया जाए और रखा जाए जो अंककृत रिकार्ड सप्लाई करता है जिस के अन्तर्गत ये विषय आते हैं: इतिहास पूर्व और पश्च, सभ्यता, पुरालेखशास्त्र ओर पुरालिपि, मुद्राशास्त्र और मोहरविद्या। इस डेटाबेस से प्राप्त की गई टीकाकृत ग्रन्थसूची एबीआईए इन्डेक्स के सीडी रोम रूपांतरण के अलावा मुद्रित रूप में हर वर्ष प्रकाशित की जाती है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र जनवरी 2007 से दिसम्बर 2011 तक इस परियोजना का समन्वयन कार्यालय है।

- एबीआई डेटा बेस में नए 65 रिकार्ड बनाए गए ।
- 102 ग्रन्थसूची रिकार्ड्स विद्वानों द्वारा तैयार किए गए ।
- नेपाल से खण्ड-4 के लिए वर्कशीट के 75 रिकार्ड्स प्राप्त किए गए ।

प्रतिलिपिकरण

पाण्डुलिपि पुस्तकालय

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश/डिजिटल संग्रह के रूप में एक हस्तलिपि पुस्तकालय का विकास किया है ताकि विभिन्न विषयों पर अप्रकाशित भारतीय

हस्तलिपियों को जो भारत में इधर-उधर विकीर्ण पड़ी है और ऐसे विदेशी संग्रहों को जिन तक अनुसन्धान करने वाले विद्वानों की पहुंच नहीं हो पाती । माइक्रोफिल्मिंग यूनिट ने विभिन्न पुस्तकालयों से जिसमें 408 रोल प्राप्त किए 4740 हस्तलिपियां और 2,48,880 पृष्ठ है । इस समय चल रहे कुछ मा । माइक्रोफिल्मिंग परियोजनाएं निम्नानुसार हैं:-

क. गवर्नमेंन्ट ओरिएन्टल मेनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी और रिसर्च सेन्टर, चिन्नई

ख. राजस्थान ओरिएन्टल रिसर्च इस्टीट्यूट, अलवर

ग. ओरिएन्टल रिसर्च इंस्टिट्यूट, मैसूर

घ. उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी हरिद्वार

प्रतिलिपिकरण

माइक्रोफिल्मों की दो प्रतिलिपियाँ इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में ही तैयार की जाती है जिसमें से एक प्रतिलिपि सेट मूल संस्था को दे दिया जाता है तथा दूसरी जनता के संदर्भ के लिए विभाग में उपलब्ध रहती है । आलोच्य वर्ष में 5275 माइक्रोफिल्म कुण्डलियाँ(प्रतिलिपि) तैयार की गई तथा 4317 माइक्रोफिल्म कुण्डलियाँ (प्रतिलिपि) निम्नलिखित केन्द्रों को प्रेषित की गई ।

1.	डॉ० यू०वी०एस०एल० लाइब्रेरी, चेन्नई	463 कुण्डलियाँ
2.	एस०बी०एल वाराणसी	1629 कुण्डलियाँ
3.	राजस्थान ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, अलवर	13 कुण्डलियाँ
4.	ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, मैसूर	580 कुण्डलियाँ
5.	टी०एम०एस०एस०एम०एल, तंजावुर	621 कुण्डलियाँ
6.	ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट एण्ड मैनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी	618 कुण्डलियाँ

माइक्रोफिल्मों से सम्बन्धित अन्य प्रमुख गतिविधियों निम्नलिखित हैं:-

- आर०ओ०आर०आई० जोधपुर के सभी शाखाओं के हस्तलिपियों के माइक्रोफिल्मिंग तथा डिजिटीकरण की अनुमति प्रदान की गई ।
- एस०वी०एल० वाराणसी में रिटेक कार्य आरम्भ करने की अनुमति प्राप्त की गई ।
- ओ०आर०आई०, मैसूर में पुन: कार्य आरम्भ किया गया ।
- हस्तलिपि माइक्रोफिल्मिंग परियोजना जी०ओ०एम०एल० चैन्नई को 31 दिसम्बर, 2008 को बन्द कर दिया गया ।
- डिजिटल से अनालाग कन्वर्शन की पाइलट टेस्टिंग परियोजना के अंश के रूप में क्रैटस इण्डिया लिमिटेड से 9 जून, 2008 को 15 माइक्रोफिल्म कुण्डलियों के साथ उनकी मूल सामग्री प्राप्त

की गई । माइक्रोफिल्म कुण्डलियों को गुणवत्ता परीक्षण के लिए श्री अमित रॉय, विभागाध्यक्ष माइक्रोफिल्म विभाग, लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस, नई दिल्ली को 11 जून, 2008 को भेजा गया । सामग्रियों की गुणवत्ता रिपोर्ट विभाग को सौंप दी गई है ।

- इस माह लगभग 22 डीवीडी, जिसमें आर०ओ०आर०आई० अलवर शाखा के 433 माइक्रोफिल्म कुण्डलियों के रूप में हस्तलिपियों की डिजिटीकृत सामग्रियों को, आर०ओ०आर०आई० निदेशक को भेजा गया ।
- मार्च, 2009 में उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी, हरिद्वार में हस्तलिपियों के माइक्रोफिल्मिंग का कार्य पूर्ण किया गया ।

स्लाइड्स एवं फोटोग्राफ्स

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के पास स्लाइडों का, एशिया में सबसे समृद्ध एवं विशाल संग्रह है। इसके पास पूरे विश्व के विभिन्न संग्रहालयों एवं पुस्तकालयों से प्राप्त संग्रह हैं जो कापीराइट के शर्तों के अनुसार संदर्भ तथा अव्यवसाय कार्यों के लिए उपलब्ध है । इस वर्ष दक्षिण पूर्व एशियाई कलाओं एवं वास्तुकलाओं पर 1013 स्लाइडें प्राप्त की गई। 301 स्लाइडें शैल कला एवं अन्य प्रकरणों पर जोड़ी गई । 110 फोटो नेगेटिव के शीर्षक, जिनके अन्तर्गत शाश्वत आर्ट गैलेरी, जम्मू की तैयार कला वस्तुएँ एवं डाटा सम्मिलित हैं ।

संरक्षण प्रयोशाला

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के पास एक पूर्ण रूप से सज्जित संरक्षण प्रयोगशाला है जो न केवल केन्द्र के संग्रहों के संरक्षण एवं मरम्मत कार्य की जरूरतों को पूरा करता है बल्कि कला और संस्कृति के क्षेत्र में कार्यरत अन्य संस्थानों को भी सहायता प्रदान करता है। यह समस्त भारत में विभिन्न कार्यशालाओं के माध्यम से जागरूकता अभियान और प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करता है। संरक्षण में निपुणता के लिए एक विशेष केन्द्र इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में बनाए जाने की योजना है। प्रयोगशाला में इस वर्ष निम्नलिखित कार्य किए गए :

1. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संग्रहों में मौजूद एलिज़ाबेथ सॉस तथा एलिज़ाबेथ ब्रुनर की 60 कलाकृतियों का संरक्षण किया गया।
2. हरिकथा संग्रह के पुस्तकों का संरक्षण कार्य प्रगति पर है तथा 63 पुस्तकों को संरक्षित करके सांस्कृतिक अभिलेखागार को वापिस कर दिया गया ।
3. जनपद-सम्पदा प्रभाग के 22 टेक्सटाइल्स को तथा पुस्तकालय के 125 पुस्तकों का कीटनाशक धूमीकरण किया गया तथा 400 पुस्तकों का सुरक्षात्मक कार्य किया गया ।

4. प्रो० महेश्वर नियोग के संग्रह के हस्तलिपियों का संरक्षण कार्य पूर्ण किया गया ।
5. कलादर्शन प्रभाग के 280 मुखौटों,लकड़ी की वस्तुएँ तथा टेराकोटा का संरक्षण तथा जनपद-सम्पदा प्रभाग के 64 मुखौटों को ठीक किया गया ।
6. डॉ० कपिला वात्स्यायन के संग्रहों की 41 अलमारियों की पुस्तकों को संरक्षित किया गया।
7. कलादर्शन प्रभाग की 14 कलाकृतियों का आरोग्य संरक्षण किया गया ।
8. सी०आई०एल० के चार हस्तलिपियों का तथा दो मूर्त्तियों की मरम्मत की गई ।

संरक्षण प्रयोगशाला ने संरक्षण तकनीकी पर कार्यशालाएँ तथा प्रदर्शनियाँ आयोजित कीं। कुछ प्रमुख गतिविधियाँ इस प्रकार से हैं:-

1. संरक्षण पर आयोजित आई-कॉम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान 18 से 20 सितम्बर, 2008 को *इण्डिजियन्स क्राफ्ट्स मैटीरियल एण्ड मेथड्स ऑफ मैनुफेक्चर एण्ड कंर्जवेशन* शीर्षक से प्रदर्शनी-प्रदर्शन का आयोजन किया गया। पूरे देश से लगभग 50 कलाकारों/हस्तकलाकारों/सर्वेक्षणकर्ताओं ने भाग लिया एवं अपनी कलाओं का प्रदर्शन किया । इन्दिरा गाँधी राष्टीय कला केन्द्र के सर्वेक्षणकर्ताओं ने भी इस सम्मेलन में भाग लिया था । डॉ० के०के०गुप्त, परामर्शदाता (सर्वेक्षण) ने इस सम्मेलन में थंकाज़ के सर्वेक्षण पर एक शोध पत्र प्रस्तुत किया ।
2. 16 से 18 सितम्बर, 2008 को फोटोग्राफिक सामग्री के सर्वेक्षण पर एक तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस अवसर पर दो फोटो सर्वेक्षण विशेषज्ञों-डॉ० नोरा वलास केनेडी, मेट्रोपोलिटन म्यूज़ियम ऑफ आर्ट, न्यूयार्क एवं डॉ० देबरा हेस नोरिस, चेयर एवं प्रोफेसर, कला संरक्षण विभाग, यूनिवर्सिटी ऑफ डेलावेयर, यू०एस०ए० को श्रोत व्यक्ति के रूप में आमन्त्रित किया गया था । इस कार्यशाला में देश के विभिन्न संस्थानों से लगभग 30 सर्वेक्षकों ने भाग लिया था ।

लिबसिस डेटाबेस में डाटा का कम्प्यूटरीकरण

आलोच्य वर्ष में 2750 केटलॉग कार्ड लिबसिस डेटाबेस में डाले गए ।

कैटलॉगिंग एवं वर्गीकरण

इस वर्ष के दौरान पुस्तकों के 15738 खण्डों का वर्गीकरण करके उनके कैटलॉगिंग की गई तथा लिबसिस डेटाबेस में डाला गया ।

पुस्तकों का अनुदर्शी सूचीकरण

आलोच्य वर्ष में संदर्भ पुस्तकालय ने पुस्तकों के अनुदर्शी सूचीकरण का कार्य आरम्भ किया। इस परियोजना के अन्तर्गत वर्तमान डाटा को मार्क-21 फॉर्मेट में परिवर्तित किया जा रहा है । नए रिकॉर्ड भी

मार्क-21 फार्मेट में उत्पन्न किए जा रहे है। इस परियोजना के अन्तर्गत 42778 रिकार्ड मार्क-21 फार्मेट में परिवर्तित किए गए तथा लिबसिस डेटाबेस में संपादित किए गए हैं ।

कैटलॉगिंग कार्य से सम्बन्धित अन्य गतिविधियाँ

- मार्क-21 यूनीकोड की सहायता से लिबसिस की लसपरिमिया में परिवर्तित करना ।
- पुस्तकों, पत्रिकाओं, हस्तलिपियों तथा स्लाइडों के लिए मार्क-21 कैटलॉगिंग फार्मेट को अन्तिम रूप देना ।
- वर्तमान डाटा का ए०ए०सी०आर० से मार्क-21 फार्मेट में परिवर्तन
- 2.5 लाख हस्तलिपियों के अनुदर्शी परिवर्तन की निविदा का विज्ञापन दे दिया गया है। कार्य 2011 तक पूर्ण होगा ।
- वर्ष 2008-2009 में 112 नए सदस्यों का नामांकन हुआ तथा 8 ने अपनी सदस्यता का नवीनीकरण कराया।

सेवाएँ

- उपयोगकर्ताओं को कुल 19369 प्रतिलिपियाँ प्रदान की गई ।
- संस्कृत हस्तलिपि के 2990 पृष्ठों के कम्प्यूटर मुद्रण निकाले गए ।
- अप्रैल, 2008 से मार्च, 2009 की अवधि में 4834 से अधिक उपयोगकर्ताओं ने संदर्भ पुस्तकालय का उपयोग किया ।
- पुस्तकों के विस्तृत ग्रन्थ सूचियों के कुल 1990 पृष्ठों का मुद्रण उपयोगकर्ताओं को दिया गया।
- अर्न्तविभागीय सदस्यों ने 5150 पुस्तकें उधार ली तथा 214 पुस्तकें बाहरी पुस्तकालयों को उधार दी गई ।

कार्यक्रम ग
सांस्कृतिक अभिलेखागार

विभिन्न विधाओं से सम्बद्ध सामग्री-साहित्य और व्यक्तिगत इतिहास, उच्चारण, चित्रकारी, संगीत, लोक साहित्य और जनजातीय कलाओं को मूल रूप में और अभिदत्त प्रतियों में और विद्वानों, कलाकारों और पारखियों द्वारा चुनी गई कृतियों को वर्गीकृत किया गया है और सांस्कृतिक अभिलेखागारों में उनकी सूचियां तैयार की गई हैं। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के माध्यम से व्यक्तिगत संग्रहों द्वारा अभिलेखागार का संवर्द्धन हुआ।

अभिलेखागार की सम्पूर्ण सामग्री सी०वी०मैस भवन से 11, मानसिंह रोड पर स्थित भवन में स्थानान्तरित कर दी गई है ।

वर्ष 2008-2009 के दौरान निम्नलिखित गतिविधियाँ सम्पन्न हुईं :-

एलिज़ाबेथ ब्रुनर की कलाकृतियाँ : 300 चित्रकलाओं की (शुष्क एवं नम) सफाई की गई तथा उन्हें आवश्यकतानुसार ठीक किया गया।

200 चित्रकलाओं एवं 300 फोटोग्राफ का सूचीकरण गया तथा उनकी डाटा प्रविष्टियाँ की गई ।

राजादीन दयाल संग्रह : राजादीन दयाल स्टूडियो के रजिस्टर्स का पुनर्निमाण : दस रजिस्टरों के लेमिनेशन करके उनकी जिल्दबन्दी का कार्य पूर्ण किया गया ।

प्रस्तावित प्रदर्शनी के लिए आरम्भिक विषयों के आधार पर फोटोग्राफों की छँटनी कर दी गई । इन फोटोग्राफों का विस्तार क्रमबद्ध तरीके से एकत्रित किया जा रहा है । प्रदर्शनी आयोजित करने के लिए एक प्रदर्शनी प्रबन्धन की खोज की जा रही है।

एस०एस०मित्रा संग्रह -पश्चिम बंगाल के मंदिरों के टेराकोटा सजावट के 650 निगेटिव्स को तैयार किए गए।

अर्जन

डॉ० कुमारस्वामी के वंशजों से आनन्द के० कुमारस्वामी के संग्रहों को अर्जित किया गया। इस संग्रह में स्वर्गीय विद्वान के व्यक्तिगत दस्तावेज,पुस्तकें, पत्रिकाएँ, कलाकृतियाँ एवं कला वस्तुएँ हैं। इससे 401 पुस्तकों का अवाप्ति की गई तथा 620 पृष्ठों का प्रस्तुतीकरण, इण्डेक्सिग एवं डिजिटीकरण किया गया ।

उत्तर पूर्वी क्षेत्र की पुस्तकें, नक्काशियाँ, नक्शे एवं मुद्रित पृष्ठ अर्जित किए गए ।

प्रलेखन

श्रृव्य-दृश्य (मीडिया केन्द्र)

आरंभ से ही इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र समुदायों की जीवन शैलियों और संस्कारों को प्रलेखित और महान विभूतियों से साक्षात्कार करने में संलग्न रहा है । श्रव्य-दृश्य यूनिट के पास अच्छी तरह से सूचीबद्ध पुस्तकालय है जो भीतरी और बाहरी उपभोक्ताओं के लिए उपलब्ध है। इस वर्ष जो मुख्य प्रलेखन कार्य किया गया उसमें से कुछ का संबंध प्रायद्वीपीय भारत के मल्लाहों/मछुआरों की संस्कृति तथा भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के बौद्ध मठों से है। इस वर्ष के दौरान किए गए मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित है:

मीडिया एकक ने प्रायद्वीपीय भारत के मल्लाहों/मछुआरों की संस्कृति पर गहन शोध एवं प्रलेखन के पश्चात् प्रलेखनों की एक श्रृंखला बनाई । ये प्रलेखन इस प्रकार से हैं:-

1. टर्निंग दि टाइड : दि फिशर फोक ऑफ तमिलनाडु
2. टर्निंग दि टाइड : दि फिशिंग कम्युनिटी ऑफ आन्ध्रप्रदेश
3. टर्निंग दि टाइड : दि फिशिंग कम्युनिटी ऑफ केरल
4. बोटमेन ऑफ इण्डिया : खारबिस ऑफ गोवा
5. बोटमेन ऑफ इण्डिया : कोलिस ऑफ महाराष्ट्र
6. बोटमेन ऑफ इण्डिया : मंगेलास ऑफ गुजरात
7. बोटमेन ऑफ कश्मीर : हंज़िस

सिक्किम में बौद्ध धर्म पर तीन उपकथाओं की एक श्रृंखला तैयार की गई । उनके शीर्षक थे- *बुद्धिस्ट मोनस्ट्रीज, आर्किटेक्चर एण्ड रिलिजियस आर्ट, बुद्धिस्ट रिलिजियस प्रैक्टिसिज़ एण्ड मेडिसिनल प्रैक्टिसिज तथा बुद्धिज़म एण्ड द इण्टरप्ले विद दि ट्राइबल कल्चर ।* त्रिपिटक गायन पर मीडिया एकक ने छः छोटी फिल्में बिनिथ दि बोधी ट्री शीर्षक से आठ राष्ट्रों-श्रीलंका, बंगलादेश, नेपाल, भारत म्यैनमार, थाइलैण्ड एवं लाओस के भक्ति गायन को सम्मिलित करके तैयार की गई है ।

उत्तर-पूर्व पर मीडिया एकक ने तीन डाक्युमेण्टरी *ट्राइब्स ऑफ मेघालय, मणिपुर : दि ज्वैल ऑफ दि नार्थ-इस्ट तथा कोणयाक एण्ड अदर ट्राइब्स ऑफ नागालैण्ड* तैयार की गई।

पंजाबी किस्सा सस्सी पुन्नु का एक प्रलेखन-नाट्य महत्त्वपूर्ण शोध के पश्चात् तैयार किया गया ।

मीडिया एकक ने कश्मीर के सूफियाना संगीत का इसके मूल को तलाशते हुए प्रलेखन एवं परम्पराओं की विभिन्न बारीकियों को रिकार्ड किया, जोकि बहुत तेजी से लुप्त हो रही हैं।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र दूरदर्शन-भारती पर एक सांस्कृतिक पत्रिका कलातंरग कार्यक्रम सप्ताह में आधे-आधे घण्टे के लिए दो बार प्रसारित करता है। मीडिया एकक ही इन कार्यक्रमों को तैयार करता है। उपरोक्त सभी फिल्में तथा डाक्युमेंट्रीज इस प्रसारण के अंश रहे हैं।

मीडिया एकक ने दो बड़े अवसरों पूर्वोत्तरी : स्पिरिट ऑफ नार्थ-ईस्ट एवं कश्मीर उत्सव पर दो फिल्म उत्सवों का आयोजन किया । पूर्वोत्तरी के अवसर पर 43 फिल्में तथा कश्मीर उत्सव पर 41 फिल्में जनता को दिखाई गई ।

मीडिया एकक नियमित रूप से इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की प्रत्येक घटना का श्रव्य-दृश्य प्रलेखन करता है। यह प्रलेखन संदर्भ के लिए सदैव उपलब्ध रहते हैं।

मीडिया एकक द्वारा तैयार डी०वी०डी०की सूची प्रतिवेदन के अन्त में जोड़ दी गई है।

उन्नयन

मीडिया एकक ने एक बहुस्तरीय आधुनिकीकरण योजना के साथ अपनी सुविधाओं में वृद्धि की जिसके अन्तर्गत सम्पादन कक्ष के अतिरिक्त एक पीसीआर सम्पादन कक्ष के साथ भी कैमरा स्टूडियों सेट एवं प्रसारण के लिए एक सभागार बनवाया।

फोटोग्राफी

यह अनुभाग नियमित रूप से इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सभी कार्यक्रमों के फोटो प्रलेखन तैयार करता है। यह फोटोग्राफ्स प्रेस प्रचार, विहगंमा पत्रिका, आईजीएनसीए न्यूज़ लेटर के लिए तथा अन्तर्राष्ट्रीय विद्वानों तथा प्रभागों को उपलब्ध कराए जाते हैं ।

कलानिधि प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन/संगोष्ठी/प्रदर्शनी

- 17 से 23 अप्रैल, 2008 को कलानिधि प्रभाग ने भारत सोका गाकी एवं इंस्टीट्यूट ऑफ ओरियण्टल फिलोस्फी के सहयोग से एक प्रदर्शनी *लोट्स सूत्रा : ए मेसेज ऑफ पीस एण्ड हार्मोनियस को-एक्जिस्टेंस* का आयोजन किया गया । इसी के साथ-साथ 19 अप्रैल, 2008 को एक संगोष्ठी *दि विज़डम ऑफ लोट्स सूत्रा ए टीचिंग फॉर ऑल एज़ेज* भी आयोजित की गई।
- 25 अगस्त, 2008 को पुस्तकालय ने भारत सोका गाकी (बी०एस०जी०) नई दिल्ली के सहयोग से *हारमोनाईज़िग रिलिजन क्रिएटिंग पीस* शीर्षक से एक संगोष्ठी का आयोजन किया ।
- 31 जनवरी तथा 1 फरवरी, 2009 को कलानिधि संदर्भ पुस्तकालय की 20वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर डिजिटल संरक्षण एवं भारतीय सांस्कृतिक धरोहर से सुगम्य पर इ०गा०रा०क०केन्द्र के सांस्कृतिक ज्ञान स्रोत के विशेष संदर्भ में, एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया । संगोष्ठी में

पूरे देश से लगभग 300 प्रतिभागियों ने भाग लिया । इस संगोष्ठी से उभरी कुछ प्रमुख संस्तुतियाँ इस प्रकार से हैं:-

- इ०गा०रा०क०केन्द्र के विभिन्न संग्रहों को एकत्रित करने के लिए सभी उत्तरदायी अधिकारियों की एक आन्तरिक समिति बनाई जाए जो इ०गा०रा०क०केन्द्र में डिजिटल पुस्तकालय विकास के लिए योजना तैयार करेगा ।
- भारत से डिजिटल पुस्तकालय विशेषज्ञों की एक बाह्य सलाहकार समिति बनाई जाए जो डिजिटल पुस्तकालय विकास तथा सम्बन्धित क्षेत्रों के विकास की समीक्षा एवं मार्गदर्शन करे ।
- नेशनल इलेक्ट्रॉनिक मैन्युस्क्रिप्ट लाइब्रेरी की प्रस्तावनाओं को अन्तिम रूप देने के लिए कलानिधि प्रभाग विशेषज्ञों की एक कार्यशाला आयोजित करे ।
- पुस्तकालय इस बात पर ध्यान केन्द्रित करे कि इ०गा०रा०क०केन्द्र के तथा इसके बाहर के उपभोक्ताओं के लिए पुस्तकालय के संग्रह अधिक से अधिक अगम्य हों।

सांस्कृतिक सायंत्रिक संचार

सायंत्रिक संचार का सृजन उपयोग, विकास और नये तकनीक के प्रदर्शन और सांस्कृतिक प्रलेखन को बढ़ाने के लिये कला और सूचना प्रौद्योगिकी अनुशासनों के बीच सहक्रियाओं की स्थापना हेतु किया गया। 2008-09 में कला एवं संस्कृति में प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के क्षेत्र में आईजीएनसीए के द्वारा किए गए कुछ अग्रणी कार्य निम्नांकित हैं।

भारतीय कला एवं संस्कृति पर राष्ट्रीय डेटाबैंक :

भारतीय कला एवं संस्कृति पर राष्ट्रीय डाटा बैंक : एक प्रायोगिक परियोजना (भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली की सहयोग से) यह परियोजना, संचार एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय में विभिन्न क्षेत्रों की गतिविधियों पर उपलब्ध सूचना एवं ज्ञान का डिजिटिकरण, प्रलेखन तथा प्रसार करने तथा अभिगम्य बनाने के विस्तृत कार्यों के कार्यक्रम का अंश है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य डिजिटल प्रौद्योगिकी के प्रयोग से भारतीय सांस्कृतिक संसाधनों के प्रवेश को बढ़ावा देना है। इस परियोजना में भारतीय कला एवं संस्कृति के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित सूचनाओं का डिजिटाइज़ेशन सम्मिलित है। परियोजना का फल शोधकर्त्ताओं, छात्रों, कला इतिहासकारों, पुरातत्त्व शास्त्रीयों इत्यादि द्वारा इण्टरनेट की सहायता से ऑनलाइन देखा जा सकता है । परियोजना के प्रदायों में संरक्षित तथा असंरक्षित पुरातत्त्व एवं धरोहर स्थानों के डिजिटल फोटोग्राफ, देशी जीवन शैली, श्रव्य एवं दृश्य पुस्तकें, चुने हुए पुरातत्त्व स्मारकों के 2-डी वाकथ्रु इत्यादि सम्मिलित है।

इस परियोजना के अन्तर्गत अभी तक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण पुस्तकालय से प्राप्त 7488 दुर्लभ पुस्तकों (लगभग 30 लाख पृष्ठ) डिजिटाइजेशन तथा 60,000 डिजिटल प्रतिबिम्ब एवं 200 घंटों के ऑडियो-विडियो सामग्रियाँ, दो स्थलों के 2डी वाकथ्रु बनाए जा चुके हैं।

सार्वसाधारण के प्रयोग हेतु आंशिक डेटा आईजीएनसीए की वेबसाइट (www.ignca.gov.in) पर प्रकाशित किया गया है।

आईजीएनसीए ने 20000 माइक्रोफिल्म रोल्स, 1.5 लाख माइक्रोफिश और डिजिटल प्रारूपों में संस्कृति, फारसी और अरबी में उपलब्ध 2.5 लाख पांडुलिपियों को अधिग्रहीत किया है। लगभग 14839 माइक्रोफिल्म रोल और 3367 माइक्रोफिश (एसबीपीके बर्लिन संग्रह) जिसमें क्रमशः लगभग 1.55 लाख और 99.45 फोलियो शामिल हैं, का डिजिटाइज़ेशन 31मार्च, 2009 तक किया गया है।

इस वर्ष 2898 माइक्रोफिल्म कुण्डलियों (18,60,736 पृष्ठों पर आधारित) एवं 1917 माइक्रोफिश (92,282 पृष्ठों पर आधारित) को डिजिटाइज़्ड किया गया। आशा है कि वर्ष 2009-10 तक सभी माइक्रोफिल्म कुण्डलियों को डिजिटाइज़्ड कर लिया जाएगा। पाण्डुलिपियों के अर्जन का कार्य चालू रखते हुए विश्वभारती की पाण्डुलिपियों के डिजिटीकरण का कार्य पूरा कर लिया गया । पाण्डुलिपि डिजिटीकरण परियोजना डीएचएएस एवं एसएसके असम में आरम्भ कर दिया गया। 31 मार्च, 2009 तक एसएस के में पाण्डुलिपियो के 60,000 पृष्ठों तथा डीएचएएस में 50,000 पृष्ठों को डिजिटाइज़ किया गया। इसी अवधि में उत्तराखण्ड के श्री मोलाराम संग्रह के पाण्डुलिपियों तथा कलाकृतियों को डिजिटाइज़्ड किया गया ।

इस अवधि में डिजिटाइज किए गए दुर्लभ फोटोग्राफिक संग्रहों (जिसमें निगेटिव तथा स्लाइड सम्मिलित है) में मुख्यतः श्री नारंग संग्रह (8730 निगेटिव फ्रेम), अरुणाचल प्रदेश पर केशव चन्द्र (3742) तथा गढ़वाल उत्सव (1000) गवरी (800), गद्दी इत्यादि सम्मिलित है। रवीन्द्र नाथ की कलाकृतियाँ (1581), अन्य कलाकृतियाँ (923) तथा रविन्द्र भवन के दुर्लभ फोटोग्राफ (12676) को भी डिजिटाइज किया गया । श्री किशोर गोर्वधन दास मुम्बई के व्यक्तिगत संग्रह के गांजिफा कार्ड के 124 सेटों से 14368 कार्डों के डिजिटीकरण का कार्य पूरा किया गया । आनन्द के कुमारस्वामी के दस्तावेज़ों तथा पुस्तकों के डिजिटाइज़ेशन का कार्य मार्च, 2009 में आरम्भ किया गया तथा आशा की जाती है कि जून, 2009 तक यह पूर्ण प्राय होगा।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र संग्रहों के चार मूर्त्तिकला नमूनों का 3-डी डिजिटाइजेशन उत्पन्न किया गया और इसे जनता में प्रसार के लिए आइजीएनसीए के वेबसाइट पर डाला जाएगा ।

कार्यशाला

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नालॉजी के प्रतिनिधियों के लिए सूचना संसाधन के डिजिटल सर्वेक्षण पर एक तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई ।

प्रदर्शनियाँ

10 से 18 जनवरी, 2009 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में *पूर्वोत्तरी दि स्पिरिट ऑफ नार्थ-ईस्ट* आयोजन के अवसर पर नार्थ-ईस्ट के विभिन्न भागों विशेषकर अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर एवं सिक्किम के चुनिन्दा, दुर्लभ चित्रों के साथ पाण्डुलिपियों के डिजिटल तथा मूल पुस्तकों की एक प्रदर्शनी लगाई गई। चित्र भागवत, रामायण, महाभारत, कल्किा पुराण, गीतगोविन्द, हरिवंश, नामघोष, गुरु पद्मजातवकाधंग, वसन्तारा जताक, लिसम्मेलन लायहराबोवा, चेक्षाबास, कांगला नुगंलो इत्यादि जिनके अन्तर्गत इतिहास, ज्योतिष, वंशावली, गणित, भूगोल, धार्मिक, भाषण, साहित्य, प्राकृतिक तथा मानव संसाधन प्रबन्ध विधियाँ, भोजन, औषधि, तंत्रमंत्र जैसे विषयों पर पाण्डुलिपियाँ डेटा में सम्मिलित है। यह मुख्यत: आसामी, संस्कृत, तइखांपति, तिब्बती एवं मणिपुरी भाषाओं में कैथली, बमुनियाँ, लहकारी, मैतयी, बंगाली लिपियों में लिखी गई है। इनमें से कुछ ग्रन्थ शंकरदेव, माधवदेव, माधव कंदली, राम सरस्वती, रघुनाथ महंत जैसे विद्वानों द्वारा लिखी गई है। इन पाण्डुलिपियों को तैयार करने में मुख्यत: सांचीपत एवं हाथ से बने कागज़ का प्रयोग किया गया है।

इसी तरह की प्रदर्शनी का आयोजन 23 फरवरी से 2 मार्च, 2009 तक जम्मू कश्मीर की पाण्डुलिपियों के लिए कश्मीर उत्सव के अवसर पर किया गया था जहाँ चरारे शरीफ, ऑरियण्टल रिसर्च लाइब्रेरी श्रीनगर, रणबीर संस्कृत रिसर्च इंस्टीट्यूट, इकबाल लाइब्रेरी, श्री प्रताप सिंह लाइब्रेरी इत्यादि से प्राप्त शारदा एवं फारसी भाषा में पाण्डुलिपियाँ प्रदर्शित की गई थी।

आई०जी०एन०सी०ए० वेबसाइट, भारतीय कला एवं संस्कृति पर सूचना का प्रमुख स्रोत है तथा वर्ष 2008-2009 के दौरान प्रतिमाह 1.5 लाख लोगों ने इस साइट को देखा। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के लिए (www.asi.nic.in)वेबसाइट को डिजाइन तथा विकसित किया जिसकी उपयोगकर्ताओं एवं विद्वानों द्वारा व्यापक तौर पर प्रशंसा की गयी है। ए०एस०आई० तथा नेशनल म्युज़ियम इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली के लिए भी वेबसाइट तैयार किए गए।

वित्तीय रिपोर्ट

सी०आई०एल० ने वर्ष 2008-2009 में विभिन्न परियोजनाओं के चलाने के लिए 1,33,13,164/-करोड़ की अनुदान राशि प्राप्त की ।

कलाकोश प्रभाग

कलाकोश प्रभाग केन्द्र के मुख्य अनुसन्धान तथा प्रकाशन स्कन्ध के रूप में कार्य करते हुए कलाओं से जुड़ी बौद्धिक तथा पाठ्य परम्पराओं का उनके बहुस्तरीय एवं विविध विद्यापरक संदर्भों में अनुसन्धान करता है। यह शास्त्र को संदर्भ के साथ, दृश्य को मौखिक के साथ और सिद्धान्त पक्ष को व्यवहार पक्ष के साथ जोड़ते हुए, कलाओं को एक साँस्कृतिक प्रणाली के समग्र ढांचे के भीतर स्थापित करने का प्रयास करता है।

कार्यक्रम क

कलातत्त्वकोश

(भारतीय कलाओं की मूलभूत संकल्पनाओं का कोश)

कलातत्त्वकोश भारतीय कलाओं की आधारभूत अवधारणाओं का एक कोश है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत व्यापक शोध एवं विशिष्ट विद्वानों के साथ विचार-विमर्श के पश्चात् लगभग 250 संकल्पनाओं के शब्दों की एक सूची तैयार की गई है। प्रत्येक संकल्पना की गवेषणा विभिन्न विषयों के लगभग 300 मूलग्रन्थों से की जाती है। इस शृंखला का प्रथम ग्रन्थ वर्ष 1988 में प्रकाशित हुआ था और तब से अब तक इसके छः खण्ड निकल चुके हैं। इस वर्ष, खण्ड सात, आठ एवं नौ हेतु तीन संगोष्ठियाँ आयोजित की गईं । कार्य की यथासमय समाप्ति के लिए विद्वानों को शोध सामग्री उपलब्ध करवाई गई ।

कार्यक्रम ख

कलामूलशास्त्र

(भारतीय कलाओं से सम्बन्धित आधारभूत ग्रन्थों की शृंखला)

कलाकोश प्रभाग का दूसरा निरन्तर कार्यक्रम है- वैदिक साहित्य, आगम , तंत्र, वास्तुकला, मूर्त्तिकला, चित्रकला, संगीत, नृत्य और नाट्य आदि सभी भारतीय कलाओं से सम्बन्धित आधारभूत ग्रन्थों का समालोचनात्मक सम्पादन करके टीका-टिप्पणियों एवं अनुवाद सहित, उन्हें ग्रन्थमाला में प्रकाशित करना। इस शृंखला के अतिरिक्त केन्द्र ने कुछ अन्य ग्रन्थों को प्रकाशित करने का कार्य लिया है, जो कलामूलशास्त्र शृंखला के लिए सन्दर्भ ग्रंथों का काम करेंगे।

प्रकाशन

इस शृंखला के अन्तर्गत निम्नलिखित ग्रन्थों को प्रकाशित किया गया :-

इस शृंखला में पाँच ग्रन्थों के 13 खण्ड एवं एक ग्रन्थ के तीन खण्डों की व्यापक प्रस्तावना प्रकाशित किए गए :-

आगम (वैष्णव, पञ्चरात्र)

1. ईश्वरसंहिता : (पाँच खण्डों में)यह वैष्णव धर्म के पाञ्चरात्र सम्प्रदाय का एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। यह प्रो० एम०ए० लक्ष्मी तताचार द्वारा सम्पादित एवं अनुवादित है तथा (स्वर्गीय) प्रो०वी०वरदाचारी एवं प्रो० जी०सी०त्रिपाठी द्वारा इसकी एक सुन्दर एवं विस्तृत प्रस्तावना दी गई है।

संगीत (पूर्वी भारतीय उड़ीसा)

2. संगीतनारायण : (दो खण्डों में) संगीत एवं नृत्य पर आधारित उड़ीसा के पारतुकिमिदि के राजा गजपति नारायण देव के मंत्री, श्री पुरुषोत्तम मिश्र द्वारा रचित ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ का सम्पादन एवं अनुवाद डॉ० मंदाक्रान्ता बोस द्वारा किया गया है।

अलंकार शास्त्र (सौंदर्यशास्त्र)

3. **सरस्वतीकण्ठाभरण : (तीन खण्डों में)**

इसके तीनों खण्डों का समालोचनात्मक सम्पादन एवं अनुवाद डॉ० सुन्दरी सिद्धार्थ ने किया है। सी आर सी की प्रतीक्षा है।

मूलभूत ग्रन्थ, वेद

4. ऋग्वेद आश्वालायन संहिता : (दो खण्डों में) यह पुस्तक पतंजलि, महीदास एवं अन्य प्रामाणिक विद्वानों द्वारा उल्लिखित ऋग्वेद की शाखा संहिताओं के अस्तित्व को समझने की प्रमाणित करने का एक प्रयास है। यह ग्रन्थ प्रो० बी०बी०चौबे द्वारा सम्पादित एवं अनुवादित किया गया है।

रूद्राध्याय

5. ऋग्वेद की शंखायान शाखा से सम्बद्ध एक दुर्लभ ग्रन्थ है । यह प्राचीन भारतीय मंत्रोच्चारण-पद्धति के विद्यार्थियों एवं विद्वानों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। यह प्रो० प्रकाश पाण्डेय द्वारा सम्पादित एवं अनुवादित ग्रन्थ है।

शाक्त-तन्त्र

6. मंथान-भैरव-तन्त्र : (तीन खण्डों में प्रस्तावना)(कुब्जिकागम) यह तन्त्र कुब्जिका देवी की पूजा को समर्पित है। एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं व्यापक ग्रन्थ है। यह कार्य 14 खण्डों में, कुल 5707

पृष्ठों का है। इसकी भूमिका तीन खण्डों में प्रकाशित हुई है। यह ग्रन्थ डॉ० मार्क डिक्ज़्कोवस्की द्वारा सम्पादित एवं अनुवादित है।

निम्नलिखित परियोजनाओं पर कार्य चल रहा है:-

वैदिक/श्रौत कर्मकाण्ड (सामवेदीय)

1. जैमिनीय-ब्राह्मण : प्रो० एच०जी०रानाडे द्वारा समालोचनात्मक सम्पादन एवं अनुवादित ग्रन्थ।

अलंकार शास्त्र (सौंदर्यशास्त्र)

2. रसगंगाधर : प्रो० रमा रंजन मुखर्जी द्वारा समालोचनात्मक सम्पादन एवं अनुवाद ।

संगीत (पूर्व मध्यकालीन उत्तर भारतीय)

3. नारद कृत संगीतमकरन्द- डॉ० एम विजयलक्ष्मी द्वारा सम्पादित एवं अनुवादित ।

वास्तुकला एवं नगर योजना

4. समरांगणसूत्रधार - (चार खण्डों में) डॉ० पी०पी०आप्टे एवं श्री सी० वी० काण्ड द्वारा संपादित एवं अनुवादित ।

वास्तुशास्त्र

5. वास्तु मंडन : सम्पादक एवं अनुवादक : डॉ० अनसूया भौमिक।

वैदिक /श्रौत कर्मकाण्ड(कृष्ण यजुर्वेद)

6. काण्वशतपथब्राह्मण : (खण्डों छ:)

7. बौधायन श्रौत-सूत्र : (चार खण्डों में) बौधायन श्रौत सूत्र भवस्वामी के भाष्य सहित । प्रो० टी०एन० धर्माधिकारी द्वारा समालोचनात्मक सम्पादन एवं प्रस्तावना सहित ।

संगीतशास्त्र

8. **रागलक्षण** : सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० आर० सत्यनारायण

भारतीय कलाओं की आधारभूत संकल्पनाओं का अन्य भारोपीय भाषाओं के साथ सम्बन्ध।

9. **ग्लासरी ऑफ की आर्ट टर्म्स :** (स्वर्गीय) प्रो० विद्यानिवास मिश्र द्वारा 100 शब्दों की शब्दावली तैयार की गई थी। गत वर्ष में जिसके अधिकांश लेख पुनः लिखे गए। इस वर्ष के दौरान, पाण्डुलिपि का प्रथम प्रारूप सम्पादित किया गया है।

वैदिक कर्मकाण्ड

10. **गोपथ ब्राह्मण :** सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० समीरन चन्द्र चक्रवर्त्ती ।

वैदिक स्वर विज्ञान

11. **याज्ञवल्क्य शिक्षा :** सम्पादक एवं अनुवादक : डॉ० नारायण दत्त शर्मा ।

वैखानस सम्प्रदाय

12. **मरीचि-संहिता :** सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० एस०एन०मूर्त्ति ।

दक्षिण भारतीय प्रतिमालक्षण विज्ञान

13. **तंत्र-सम्मुच्चय :** सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० के० के० राजा।

असाम्प्रदायिक पाञ्चरात्र

14. **हयशीर्ष- पाञ्चरात्र :** सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० गयाचरण त्रिपाठी

कर्नाटक संगीत

15. **रागविबोध :** सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० रंगनायकी अय्यंगर

बौद्ध दर्शन

16. **शतसाहस्त्रिकाप्रज्ञापारमिता :** सम्पादक एवं अनुवादक : डॉ० रत्ना बसु

शाक्त तंत्र

17. **साधनमाला :** सम्पादक एवं अनुवादक : पं० सातकड़ि मुखोपाध्याय

शैवागम

18. **अघोरशिवाचार्य पद्धति** : सम्पादक एवं अनुवादक : (स्वर्गीय) डॉ० एस० एस० जानकी । उनके विद्यार्थी सम्पादकीय कार्य कर रहे हैं।

खगोल-विज्ञान

19. **राजप्रश्नीय सूत्रम्** : सम्पादक एवं अनुवादक : एस०आर०सरमा ।

अंलकार शास्त्र

20. **शारदातनय कृत भाव-प्रकाशन** : सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० जे०पी०सिन्हा

कार्यक्रम (ग)
कलासमालोचना शृंखला
(समालोचनात्मक विद्वता और शोध के प्रकाशनों की शृंखला)

कलाकोश प्रभाग के कलासमालोचन कार्यक्रम के अन्तर्गत ऐसे ग्रन्थ प्रकाशित किए जाते हैं, जिनमें कलाओं तथा सौन्दर्यशास्त्र के विभिन्न पक्षों पर समालोचनात्मक सामग्री समाविष्ट हो । इस शृंखला के एक भाग के अन्तर्गत ऐसे विख्यात विद्वानों की कृतियों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है, जिन्होंने आधारभूत संकल्पनाओं का विस्तारपूर्वक निरूपण किया है, चिरस्थाई स्रोतों का अन्वेषण किया है और नानाविध परम्पराओं के मध्यम सम्पर्क-सेतुओं का निर्माण किया है । इसके दूसरे भाग के अन्तर्गत, कुछ चुनिंदा विद्वान् लेखकों की कृतियों के पुनरीक्षित व पुनर्व्यवस्थित संस्करण एवं अनुवाद प्रकाशित किए जाते हैं । इस कार्यक्रम का सर्वाधिक उल्लेखनीय उपक्रम है; डॉ० आनन्द के० कुमारस्वामी की कृतियों का, विषयपरक पुनर्व्यवस्थापन तथा लेखक के प्रामाणिक संशोधनों सहित,एवं विख्यात विद्वानों द्वारा सम्पादित रूप में पुनर्मुद्रण।

गत वर्ष निम्नलिखित चार खण्डों का प्रकाशन एवं विमोचन हुआ :-

1. **एलिमेण्ट्स ऑफ बुद्धिस्ट आइकॉनॉग्राफी : डॉ० आनन्द के० कुमारस्वामी**
   इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के डॉ० आनन्द कुमारस्वामी के संग्रहीत कार्यों के प्रकाशन कार्यक्रम में 16वाँ ग्रन्थ है । यह खण्ड कुमारस्वामी के प्रतिमा विज्ञान विषयक ज्ञान तथा उनका ज्ञान प्रतिमा विज्ञान के अन्तर्गत सम्पूर्ण तात्त्विक परम्परा और साथ ही इस्लाम और ईसाइयत में वर्तमान परम्पराओं का विशद विवेचन है । इसका सम्पादन श्री कृष्ण देव द्वारा किया गया है ।

2. **प्रो० के०एस बेहरा द्वारा द लिंगराज टेम्पल ऑफ भुवनेश्वर आर्ट एण्ड कल्चरल लिगेसी**
   11 वीं शताब्दी में बना भुवनेश्वर का लिंगराज मंदिर भारत के बेहतरीन मंदिरों में एक माना जाता है । यह उड़ीसा के मंदिरों की निर्माण शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है एवं भविष्य में बनने वाले मंदिरों के लिए आदर्श भी है। इस पुस्तक में पहली बार इस मंदिर की सम्पूर्णता को समझाने के लिए हर पहलू जैसे इतिहास, वास्तुकला,मूर्तिकला, धार्मिक कृत्यों, त्यौहारों, सेवा संस्थाओं इत्यादि पर गहन अध्ययन किया गया ।

3. **शारदा एवं टाकरी एल्फाबेट्स : ओरिजन एण्ड डेवलप्मेंट - डॉ० बी०के०कौल डिम्बी**
   इस कार्य का सम्पूर्ण अध्ययन मूल रिकार्डों पर आधारित है एवं प्रकाशित प्रतिकृतियों, छायाचित्रों एवं मूल शिलालेखों एवं हस्तलिपियों से तैयार पुरालिपि तालिकाओं और चार्टों द्वारा व्यापक रूप से विषय को स्पष्ट किया गया है।

4. **कल्चरल हिस्ट्री ऑफ उत्तराखण्ड- प्रो०डी०डी०शर्मा**

उत्तराखण्ड के सांस्कृतिक इतिहास का यह खण्ड प्रागैतिहासिक से आधुनिक समय तक उत्तराखण्ड में रहने वाले विभिन्न जनजातियों एवं जातियों के सांस्कृतिक इतिहास के विभिन्न पहलुओं के बारे में अन्तरंग जानकारी सामान्य पाठकों के साथ-साथ छात्रों को भी देने का एक दुर्लभ सुअवसर है।

इस शृंखला के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रकाशन के विभिन्न अवस्थाओं में हैं:-

1. एसेज़ ऑन म्यूज़िक ऑफ ए०के० कुमारस्वामी सम्पादक श्रीमती प्रेमलता शर्मा।
2. उज्वलनीलमणि ऑफ श्रीरूपगोस्वामी- सम्पादक श्रीमती उर्मिला शर्मा।
3. इलस्ट्रेटिड बालिसत्र भागवत पुराण-सम्पादक प्रो० के०डी०गोस्वामी ।
4. संगीत साहित्य दर्शन : ठाकुर जयदेव सिंह के निबन्धों का संग्रह (दो खण्डों में) सम्पादक डॉ० उर्मिला शर्मा ।
5. इण्डो पोर्चुगीज़ इम्ब्रायडरीज : आर्ट कॉन्टेक्स्ट हिस्ट्री-सम्पादक टी०पी०परेरा एवं लोतिका वरदाराजन ।
6. टू कालामुख टेम्पल्स ऑफ कर्नाटक : वसुंधरा फिलियोजा एवं पी०एस०फिलियोजा।
7. रस-देश : कमेण्ट्री ऑन केलिमाल -श्री राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी द्वारा स्वामी श्री हरीदास के संग्रहित श्लोक (537-632 ई०पूर्व) ।

क्षेत्र अध्ययन

दक्षिण-पूर्व एशियन कार्यक्रम

23 जून से 6जुलाई, 2008 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विद्वानों के दल एवं सदस्य-सचिव डॉ० कल्याण कुमार चक्रवर्ती ने इण्डोनेशिया, मलेशिया, वियतनाम एवं कम्बोडिया का दौरा किया । इन देशों के शोध संस्थानों एवं प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों के साथ सहयोग स्थापित किए । इसके अतिरिक्त इस टीम ने बालि (इण्डोनेशिया)की संस्कृति पर कई घण्टों का ऑडियो-वीडियो प्रलेखन तथा दक्षिण-पूर्व एशियन विभाग के पुस्तकालय की वृद्धि हेतु कुछ प्रकाशन भी प्राप्त किए ।

दो पुस्तकें- आर्ट एण्ड आर्कियालॉजी ऑफ मेनलैंड साउथ-ईस्ट एशिया की संस्कृति पर - सम्पादक डॉ० बच्चन कुमार एवं रिसेन्ट स्डडिज इन इण्डोनेशिया आर्कियालॉजी सम्पादक डॉ० एदि सत्यवती तथा प्रो० आई०वयन अर्दिक प्रकाशन हेतु तैयार हैं।

संगोष्ठियाँ/स्मारक व्याख्यान

इस वर्ष 17 नवम्बर,2008 को मैसूर में भारतीय भाषाओं के केन्द्रीय संस्थान के निदेशक श्री प्रो० उदय नारायण सिंह ने सुनीति कुमार स्मारक व्याख्यान प्रस्तुत किया । उन्होंने इसे दो भागों में - सुनीति कुमार : *इन सर्च ऑफ मेटाफर्स* प्रस्तुत किया । पहला व्याख्यान *हाउ टू स्टडी लैंग्वेज एण्ड कल्चर ओर पिचिंग बिट्वीन द ग्लोबल एण्ड लोकल* एवं दूसरा व्याख्यान सुनीति-शतकम् : ऑन पोलिसी पर्सपैक्टिव एण्ड प्लूरलिज़्म पर था । इस अवसर पर कलानिधि विभाग ने इ०गा०रा०क०केन्द्र के पुस्तकालय से सुनीति कुमार चटर्जी के वैयक्तिक संग्रह से दुर्लभ पुस्तकों की एक प्रदर्शनी आयोजित की ।

नवद्वीप में 12 से 14 फरवरी, 2009 को श्री चैतन्य महाप्रभु पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

25 से 28 मार्च, 2009 को ऋग्वेद के केरलीय पाठ एव तैतिरीय संहिता के गायन पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

27 से 29 मार्च, 2009 को पुराणों की क्षेत्रीय विभिन्नता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया । संगोष्ठी के शैक्षणिक सत्र में प्रतिदिन शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम के दौरान, पञ्चवाद्यम् एवं केरल का कुडिअट्टम, इन्द्रध्वजोत्सव एवं सौभाग्यललिता (कर्नाटक से) उड़ीसा का पाला एवं आन्ध्रप्रदेश की हरिकथा पारम्परिक कलाकारों द्वारा प्रदर्शित किए गए ।

24 मार्च, 2009 को डॉ० कपिला वात्स्यायन ने इ०गा०रा०क०केन्द्र के 20 खण्डों में दस प्रकाशनों का विमोचन किया । इ०गा०रा०क०केन्द्र न्यास के अध्यक्ष श्री चिन्मय आर०घारेखान ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

वैदिक प्रलेखन

कलाकोश दुलर्भ वैदिक अनुष्ठानों एवं वैदिक वाचन पद्धति के प्रलेखनों एवं संरक्षण के लिए एक महत्त्वपूर्ण परियोजना पर कार्यरत है। इस परियोजना के तहत, विभिन्न राज्यों से वैदिक पंडितों की पहचान एवं उनके गायनों का प्रलेखन के लिए अनुरोध के कार्य निष्पादन के साथ-साथ कई लुप्तप्राय: संहिताओं के वाचन पद्धति के प्रलेखन का कार्य विभाग द्वारा सम्पादित किया गया । गत वर्ष त्रिसूर (केरल) में केरलीय ऋग्वेद परम्परा एवं माध्यन्दिन शतपथ-ब्राह्मण का प्रलेखन किया गया ।

जनपद सम्पदा प्रभाग

जनपद सम्पदा, आर्थिक-सांस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टियों से समुदाय की जीवन शैलियों, परम्पराओं, लोक विद्या तथा कला प्रणालियों सहित संस्कृति के सैद्धांतिक आयामों पर शोध तथा प्रलेखन से संबंधित है। मौखिक परंपराओं पर केन्द्रित इस संभाग का कार्यपटल विभिन्न सांस्कृतिक दलों तथा समुदायों के बीच अन्तस्संबंधों को बल देते हुए, बहुविषयक दृष्टिकोण से क्षेत्रीय अध्ययन तक फैला है। कलाकोश के कार्यकलाप के सम्पूरक के रूप में, जनपद सम्पदा की गतिविधियाँ लघु समुदायों की रंगबिरंगी धरोहर को अपना विवेच्य बनातीं हैं। इसके कार्यक्रम दैनन्दिन भाषा के जन, लोक, देश लौकिक तथा मौखिक आदि शब्दों से उद्भूत होते हैं। इस संभाग के कार्यकलाप निम्नलिखित हैं:-क) मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह (ख) बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियाँ तथा गतिविधियाँ (ग)जीवन शैली अध्ययन (जिसे दो भागों में बाँटा गया है। (1) लोक परम्परा (2) क्षेत्र सम्पदा

कार्यक्रम (क)
मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह

मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने कौथिक गढ़वाल उत्सव मनाने के उपक्रम में श्री अरविन्द मुद्गिल ने गढ़वाल पर 400 डिजिटाइज़्ड फोटोग्राफ्स एवं श्री मोलाराम से 35 डिजिटाइज़्ड कलाकृतियों के चित्रकलाओं के फोटोग्राफ्स एवं 20 डिजिटाइज़्ड पाण्डुलिपियाँ प्राप्त की ।

संगोष्ठी के दौरान, पश्चिम बंगाल एवं झारखण्ड की पारम्परिक जीवन शैली एवं संथाल संस्कृति की प्रदर्शनी एवं प्रलेखन तथा 56 लघु शिल्प सामग्री प्राप्त की।

उत्तरी-पूर्व कार्यक्रम में, 1000 पुस्तकें, 1100 मानवजाति अध्ययन विषयक सामग्री एवं 250 घण्टों का श्रव्य-दृश्य प्रलेखन कार्यों का सम्पादन किया गया ।

कार्यक्रम (ख)
आदि दृश्य

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के शैक्षणिक कार्यक्रमों का एक महत्त्वपूर्ण कार्य मानव की मौलिक अवबोधन शक्तियों से उद्भूत कलात्मक आविर्भावों का अन्वेषण करना है। मानव को अपनी दृश्य एवं श्रव्य रूपी आद्य शक्तियों के फलस्वरूप ही संसार के प्रति जागरूकता का बोध हुआ ।

शैलकला आदि दृश्य कार्यक्रम का महत्वपूर्ण संघटक है। इस परियोजना के लिए एक बहुअनुशासनात्मक अभिगम अपनाया जा रहा है। क्षेत्रीय प्रलेखन विभिन्न अनुशासनों जैसे कि

पुरातत्वविद्, मानवविज्ञानी, लोकविशेषज्ञ, नृवानस्पतिक, भूगर्भविज्ञानी, रासायनिज्ञ इत्यादि, और संबंधित क्षेत्र/परिक्षेत्र के संस्थाओं के सहयोग से किया जा रहा है। परियोजना का उद्देश्य है: (1) मूलपाठ विषयक और प्रसंगानुकूल वीडियो और फोटो प्रलेखन (2) पुरातात्विक अनुसंधान के लिए भीतरी प्रदेशों के लोगों के साथ संचार के लिए, संबंधित लोकसाहित्य और प्राकृतिक तथा मानवनिर्मित परिदृश्यों के प्रलेखन के आधार पर पाषाण कला भूदृश्य के जैवसांस्कृतिक मानचित्र, मानसिक और वातावरणीय मानचित्रावली (3) ढांचागत, पारिस्थितिकी और, स्थानीय तकनीक और सामग्री को वरीयता देते हुए दुर्लभ मामलों में सीधे संरक्षण के लिए सुझाव देना । (4) फोटो एवं वीडियो अभिलेख को विकसित करना (5) इस क्षेत्र में वीडियो प्रलेखन के आधार पर डाक्यूमेंट्री तैयार करना। (6) प्रदर्शन (स्थायी, चल, अस्थायी) को संगठित करना (7) मुद्रित और इलैक्ट्रॉनिक मीडिया दोनों में प्रकाशन निकालना ।

शैलकला एवं उससे सम्बद्ध विषयों का प्रलेखन एवं अध्ययन

क्षेत्रीय अध्ययन

वर्ष के दौरान तमिलनाडु, राजस्थान एवं आन्ध्रप्रदेश में स्थल अध्ययन किए गए । प्रलेखन कार्य के प्रथम चरण में तमिलनाडु एवं उससे सम्बद्ध विषयों का प्रलेखन 15 से 26 अगस्त, 2008 को कृष्णगिरी एवं धर्मपुरी जिले में किया गया। नौ शैलकला स्थलों एवं पाँच गाँवों का प्रलेखन कार्य किया गया । शैलकला के क्षेत्र मालासंदिराम , वर्मानाकुन्ता, महाराजा कदाई, पायमपल्ली, मल्लपदी, माईलादुमपराई,सन्नारप्पन, थालापल्ली हैं। गाँव है- मालासंदिराम, पायमपल्ली, महाराजा कदाई, वर्मानाकुन्ता एवं तोगरपल्ली हैं।

औपथवली में कृष्णा मन्दिर (विजयनगर साम्राज्य का नायक युग) एवं कृष्णगिरी जिले के कावेरीपटनम में शिव मंदिर (चोल समय के अतिरिक्त धर्मपुरी के पुरातन संग्रहालय एवं धर्मपुरी जिले में आदियामन की शिलालेख का प्रलेखन भी हुआ ।

19 से 31 जनवरी, 2009 तक डिंडीगुल जिले में प्रलेखन के दूसरे चरण का कार्य हुआ। आठ शैल-कला एवं प्राचीन स्मारक स्थानों का प्रलेखन हुआ । इस क्षेत्र के तीन गाँव एवं एक समुदाय नामत: पलियास एवं पलानी का प्रसिद्ध मुरगन मन्दिर एवं थंडीकुडी का भी प्रलेखन कार्य हुआ। थंडीकुडी मुंगीलाली नैनावराई, नीलकुटीपरा, नीलकुटीपराई, कारुवेलमपट्टी, पाकिआयली, मयिलादुमपराइ एवं काडावुमलाई, शैलकला एवं प्राचीन स्मारकों के क्षेत्र-थंडीकुडी, कोम्बाईपट्टी एवं पुलिकुटीकाडो गाँव हैं।

राजस्थान में, द्वितीय चरण में 6 से 15 दिसम्बर, 2008 को बूंदी जिले में प्रलेखन कार्य किया गया है। इस चरण में, 12 शैल कला दृश्यों एवं दो गाँवों का प्रलेखन किया गया । शैलकला के क्षेत्र है-गोलपुर, पालका, बाणगंगा बांका, रायो का चट्कया, ढोलमरी का टोल, राम का टोल, काला टोल, खजुरी कुडी,

कवारपुरा, भीमलट एवं फटी सिला की टोल। गाँव है- बाँका एवं महुआ। गत वर्ष प्रथम चरण में 13 दृश्यों एवं तीन गाँवों का प्रलेखन कार्य किया गया ।

आन्ध्रप्रदेश में द्वितीय चरण में 17 से 27 दिसम्बर, 2008 को अनन्तपुर, कडप्पा, कुरनूल एवं महबूबनगर जिले का प्रलेखन कार्य का दायित्व लिया । छः शैलकला स्थलों एवं आलमपुर के शिव मन्दिर का प्रलेखन किया गया । शैलकला के क्षेत्र-बुद्धगवी, चिन्ताकुण्ड, मेलावरम, केथावरम, पुरीचरेला एवं कन्नामदाकला हैं। गत वर्ष प्रथम चरण में सात स्थानों एवं चार गाँवों का प्रलेखन कार्य किया गया ।

उपर्युक्त क्षेत्र अध्ययन के रूप में लगभग 4550 फोटोग्राफ्स, 650 स्लाईड्स, 170 रेखाचित्र, 19 घण्टों का विडियो प्रलेखन, 4 घण्टों का ऑडियो प्रलेखन एवं सभी दृश्यों के जीपीएस डाटा पर कार्य किया गया ।

प्रलेखन एवं कैटलॉगिंग

निम्नलिखित प्रलेखन की स्थिति एवं कैटलॉगिंग के क्षेत्र डाटा प्राप्त किए :-

1. उड़ीसा का क्षेत्र डाटा शीट (चरण-1 एवं 2) मध्यप्रदेश, उत्तराखण्ड, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, कर्नाटक, तमिलनाडु एवं आन्ध्रप्रदेश (फेस 1 एवं 2) को सुनियोजित एवं कंप्यूटरीकृत किया गया ।
2. कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, राजस्थान, लद्दाख, उत्तरखण्ड, उड़ीसा, मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ की प्रारम्भिक क्षेत्रीय रिपोर्ट को संकलित किया गया ।
3. शैलकला 5000 वर्णनात्मक फोटोग्राफ्स को कंप्यूटरीकृत किया गया।
4. झारखण्ड के शैल कला दृश्यों की सूची हेतु आठ स्थलमानचित्रों को जीपीएस डाटा से पुनः निर्मित किया गया।
5. झारखण्ड का श्रव्य-दृश्य क्षेत्रीय डाटा का सम्पादन कार्य प्रगति पर है ।

स्पेनिश संस्थान के साथ समझौता ज्ञापन

20 मार्च 2009 को मध्य प्रदेश में भीमबेटक शैल कला तथा उसके आस-पास की एवं स्पेन में बारंको मोरेनो (बाएकोर्प, वालेन्सिया) पर तुलनात्मक एवं बहु-अनुशासनीय अध्ययन हेतु वालेंसिया दि कन्सर्वासियो आई रेस्तारेसियो दि बेन्स कुल्तुराल्स एवं सेन्त्र दि एस्त्युदिस कान्सेस्टांस के बीच समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित हुआ ।

शैल कला परियोजना के क्षेत्रीय समन्वायकों तथा बहुविज्ञ सदस्यों की पुनरीक्षण बैठक 5-6 मार्च, 2009 को सम्पन्न हुई।

आदि दृश्य

आदि दृश्य परियोजना के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए :-

(1) हिन्द इस्लामी तहज़ीब के रंग-अक़ीदत के संग

संगोष्ठी/सार्वजनिक व्याख्यान/प्रदर्शनी /प्रदर्शन

प्रतिष्ठित विद्वानों द्वारा राष्ट्रीय सेमिनार, लोक व्याख्यान प्रदर्शनियों और सांस्कृतिक प्रदर्शन का आयोजन 1 से 8 अप्रैल, 2008 तक किया गया । इस्लाम में भक्ति के विभिन्न रंगों से सम्बन्धित अब तक अनजानी प्रदर्शनात्मक परम्पराओं पर जोर दिया गया । ये परम्पराएँ काव्य, गायन की रीति, संगीत, लेखन, वास्तुकला, कथा वाचन, गाथाओं, सूफी, पूजा एवं भक्ति की देशज परम्पराओं को विशेषतौर पर स्थानीय एवं क्षेत्रीय संस्कृति को उजागर करती हैं। इसका मुख्य उद्देश्य इसी परिप्रेक्ष्य में इन परम्पराओं की भारतीय मूलकथा को रेखांकित करना था ।

(2) चार बैत प्रलेखन का ऑडियो-वीडियो

चार बैत काव्य फारसी एवं पश्तो में रचा गया। भारत में इसका परिचय मुगल शासन काल के दौरान हुआ, जहाँ रोहिल्ला पठानों ने इसे विशेषतौर पर समृद्ध किया । यद्यपि इसके मूल रूप एवं शैली का काफी ह्रास हो चुका है, भोपाल, रामपुर एवं टोंक में अभी तक यह प्रचलन में है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने 17 से 19 दिसम्बर, 2008 तक तीन दिवसीय चार बैत प्रलेखन कार्यशाला का आयोजन किया। तीनों क्षेत्रों के सभी प्रतिभागियों ने 45 कलाकारों एवं उनके रंगपटल का लगभग 15 घण्टों का सतत् प्रलेखन किया गया। इसके अतिरिक्त, इन तीन दलों, चार बैत के इतिहास के प्रतिष्ठित एवं प्रसिद्ध विद्वान डॉ० शौक़त खान एवं टोंक के फारसी-अरबी पाण्डुलिपि पुस्तकालय के निदेशक को भी विशेषज्ञ के रूप में आमन्त्रित किया। डॉ० शौक़त ने एक व्यापक साक्षात्कार में इस मृतप्राय: कला रूप के ऐतिहासिक एवं सामाजिक -सांस्कृतिक पहलुओं को उजागर किया । इस कार्यशाला की परिणति एक सार्वजनिक प्रदर्शन के रूप में हुई जिसमें सभी तीन दलों के सदस्यों ने एक अद्भूत साँस्कृतिक प्रस्तुती उपस्थित की।

कार्यक्रम (ग)

जीवन शैली अध्ययन

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न समुदायों की मौखिक परम्पराओं पर विशेष बल दिया जाता है। यहाँ कलात्मक अभिव्यक्तियों को विभिन्न जीवन शैलियों तथा जीवन कार्यों में सन्निहित रूप से देखा जाता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत लोक परम्परा एवं क्षेत्र-सम्पदा दो मुख्य कार्य क्षेत्र है।

लोक परम्परा

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत साँस्कृतिक समुदायों की उन जीवन शैलियों पर बल दिया गया है जो उनके भौतिक एवं प्राकृतिक निवास स्थान, सामाजिक -साँस्कृतिक एवं अर्थशास्त्रीय विधियों एवं उनके सृजनात्मक तथा रचनात्मक जीवन से प्रकट होता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत परियोजनाएँ, क्षेत्रीय आधार पर किए गए अध्ययन के चारों ओर घूमती हैं। वर्ष 2008-2009 में, निम्नलिखित परियोजनाएँ प्रारम्भ हुईं:-

1. **मध्य एवं पश्चिम हिमालय के चुनिन्दा जनजाति समुदायों के मूर्त एवं अमूर्त विरासत के संरक्षण एवं उन्नति का प्रलेखन-**

   इस परियोजना के अन्तर्गत रम्माण के ऑडियो-वीडियो प्रलेखन का दायित्व अपने हाथ में लिया। रम्माण एक ऐसा धार्मिक उत्सव है जो झारखण्ड के गढ़वाल जिले के चमौली के पेनखण्ड घाटी के दो गाँव सालूर एवं डुंगरा में प्रतिवर्ष धार्मिक रंगमंच के रूप में प्रस्तुत किया जाता है । विभाग ने इस उत्सव को अपनी तीन क्षेत्रीय यात्राओं के दौरान पूरा किया । इस परियोजना का प्रतिफल पी०डी० फोर्मेट में 28 घण्टों का ऑडियो-वीडियो प्रलेखन एवं 40 फोटोग्राफ्स है । यूनस्को के अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिवेदन सूची में नामांकन समावेश हेतु इस डाटा से दस्तावेज़ तैयार किए गए । उपशीर्षक के साथ 10 मिनट की एक फिल्म यूनेस्को के लिए तैयार की गई ।

2. **संथाल सांस्कृतिक एवं पश्चिम बंगाल एवं झारखण्ड के राज्यों की पारम्परिक जीवन शैली पर संगोष्ठियाँ, प्रदर्शनी एवं प्रलेखन**

   यह परियोजना ऑल इण्डिया संथाल वेल्फेयर एण्ड कल्चरल सोसाइटी (एआइएसडब्ल्युएसीएस) के सहयोग से आरम्भ की गई । इस परियोजना का उद्देश्य आदिवासी एवं गैर-आदिवासी समुदायों के बीच आदिवासी जीवनशैली एवं संस्कृति के प्रति जागरूकता का संचार करना है, चित्रकला छायाचित्रों एवं प्रलेखन के माध्यम से लक्ष्य समूहों की पारम्परिक जीवनशैली एवं उनकी संस्कृति के विभिन्न घटकों को चित्रित करना एवं सामाजिक वर्जनाओं, परिभाषिक शब्दावली एवं मिथकों सहित आदिवासी संस्कृतियों के प्रमुख पहलुओं को दिखाना है। 11 से 18 अप्रैल, 2008 को दुमका (झारखण्ड)में, 20 से 27 अप्रैल, 2008 को बांकुरा (पश्चिम बंगाल) एवं 17 से 28 अप्रैल, 2008 को जलपाईगुडी(पश्चिम बंगाल) में संगोष्ठियाँ एवं प्रदर्शनियाँ आयोजित करके इन उद्देश्यों को पूरा किया गया । इस परियोजना का प्रतिफल तीन सैटों की रिपोर्ट में इस प्रकार से है:- 1) *द सोहरे फेस्टिवल एण्ड देयर इम्पैक्ट ऑन सोसाइटी* । यह 136 पृष्ठों की 137 फोटोग्राफ्स सहित रिपोर्ट है। 2) *फेयर्स एण्ड मेलास: सेन्टर्स फॉर कल्चरल एक्सचेंज अमंग द संथाल्स:* यह 140 छायाचित्रों सहित 156 पृष्ठों की रिपोर्ट है। 3)

द संथाल फेस्टिवल एण्ड देयर रिलेशनशीप विद नेचर । रोजमर्रा की चीजों, आभूषण, वैयक्तिक परिवर्तन सहित पारम्परिक चीजों के फोटोग्राफ्स इत्यदि, कार्यक्रम के वीडियो प्रलेखन की 13 सीडी के सैट एवं 28 छोटी शिल्प वस्तुओं के सैट अर्जित किए।

3. **वेबसाइट तैयार करने हेतु मध्य प्रदेश एवं राजस्थान के लोक एवं जनजाति समुदायों की कलाओं एवं सौन्दर्यशास्त्र का प्रलेखन**

यह परियोजना जनजाति कला एवं संस्कृति की बेवसाइट पर शुरू करने के लिए सृजनक्षम जनजातीय कलाकारों की कलाओं के विभिन्न स्वरूपों एवं चित्रकलाओं को बढ़ाने के लिए इ०गा०रा०क०केन्द्र की वेबसाइट के अंग के रूप में आरम्भ की गई। यह विश्व समुदायों को उनके कार्यों से परिचित होने एवं समझने में सहायता करेगा। इस परियोजना में गत वर्ष मध्यप्रदेश के गोंड एवं भील कलाकारों की 34 सीडी तैयार करके वेबसाइट पर डाली गई।

गतिविधियाँ

17 से 21 जून, 2008 से भुवनेश्वर, उड़ीसा में सम्मेलन रखा गया इसमें लगभग 40 जनजातीय लेखकों ने प्रतिभागिता की । इस संगोष्ठी की एक मुख्य विशेषता यह रही कि इसमें आदिवासी लेखकों को उनकी भाषा में, उनके बारे में लिखे लेखों के लिए आमन्त्रित किया गया ।

(2) कौथिक उत्सव गढ़वाल

इस उत्सव के दौरान 20 से 25 अक्तूबर, 2008 को निम्नलिखित गतिविधियाँ आयोजित की गई :-

क) **पारम्परिक चिकित्सक कार्यशाला** : इस कार्यशाला में गढ़वाल के लगभग 35 पारम्परिक चिकित्सकों ने प्रतिभागिता की और अपनी सुविज्ञता, ज्ञान पद्धति एवं बौद्धिक परम्परा, पारिस्थितिकी सम्बन्ध, जैविक विभिन्नता एवं रोगहर पद्धति के अनुभवों का आपस में विमर्श किया । कार्यशाला में आदान-प्रदान सत्र, स्कूली बच्चों के साथ कार्यशालाएँ, सामूहिक चर्चा, दुर्लभ पाण्डुलिपियों एवं औषधियों का प्रदर्शन, मुफ्त सलाह एवं चिकित्सा आदि समाविष्ट थे ।

ख) **प्रदर्शनी**

इस कार्यक्रम के दौरान दो प्रदर्शिनियाँ आयोजित की गई -श्री अरविन्द मुदगिल द्वारा *हिल मेटाफोर्स फ्रॉम गढ़वाल।* इसमें पारम्परिक गढ़वाल को उसकी मानवजाति-ऐतिहासकिता, धार्मिक, सामाजिक-आर्थिक प्रस्तुतियों के साथ प्रदर्शित किया गया । 6भागों में बाँट कर 400 फोटोग्राफ्स की प्रदर्शनी लगाई गई 1) प्राकृतिक संसार 2)

पवित्र संसार (पाठ्य मौखिक/दृश्य) 3) जीवन शैली की झलकियाँ 4) सृजनात्मकता 5) मेला उत्सव एवं धार्मिक कृत्य मनाना 6) गढ़वाल की महिलाएँ। 18वीं शताब्दी के चित्रकार गढ़वाल स्कूल के श्री मोला राम की 35 दुर्लभ चित्रकारियाँ एवं 20 पाण्डुलिपियों की दूसरी प्रदर्शनी लगाई गई । श्री मोला राम के समग्र संकलन को भी डिजिटाइज्ड किया गया ।

ग) **सांस्कृतिक प्रदर्शन :** उत्सवों के दौरान रम्माण, जीतू बगरवाल, पोना नृत्य एवं चक्रव्यूह को रंगमंच पर भी प्रदर्शित किया गया ।

पूर्वोत्तर अध्ययन कार्यक्रम

आईजीएनसीए ने भारत के उत्तरी पूर्वी राज्यों में अनुसंधान, प्रलेख, प्रकाशन, प्रोत्साहन, संरक्षण, पुनर्जीवन और सुरक्षोपाय, मूर्त और अमूर्त सांस्कृतिक संसाधनों के लिए कई गतिविधियों को प्रारंभ किया है । केंद्र ने सरकारी कार्यालयों, स्थानीय स्वैच्छिक संगठनों, संस्थाओं, सामुदायिक संसाधन व्यक्तियों, सामाजिक सक्रिय लोगों, विश्वविद्यालय विभागों, स्थानीय विशेषज्ञों और विद्वानों, राज्य और जिला प्रशासन, स्थानीय पुलिस इत्यादि के सहयोग से गतिविधियों की शृंखला शुरू की है। स्थानीय लोग आईजीएनसीए की गतिविधियों में भाग ले रहे हैं और सहयोग प्रदान कर रहे हैं। 33 से अधिक जनजातियां प्रलेखित की गईं, नृत्य और गीत के 175 रूप रिकॉर्ड किए गए। जनजातीय और लोगों के मौखिक इतिहास पुस्तक के रूप में संकलित की जा रही हैं। विभिन्न जनजातीयों और समुदायों के कर्मकांड और त्यौहार को रिकॉर्ड और प्रलेखित किया गया। दुर्लभ पुस्तकों और पांडुलिपियों को अंकीकृत और संरक्षित किए गए। संरक्षण और सुरक्षा के देशज तरीके रिकॉर्ड किए गए। ये लोकप्रिय बनाए गए और उनकी उपयोगिता का मूल्यांकन संरक्षण और सुरक्षा के आधुनिक तकनीक के आगे-पीछे किया गया। प्रचलित कानूनों का प्रलेखन किया गया। असुरक्षित और सुरक्षित पुरातात्विक और विरासत के स्थलों को प्रलेखित किया गया। लोक देवताओं के आकृति और भौतिक सीमाओं से श्रेष्ठ बनाने के लिए मानसिक मानचित्र उत्पन्न करने के लिए वृतांत को पुनः तैयार करने के प्रयास किए गए। कुछ महत्वपूर्ण गतिविधि और उनक गतिविधियां निम्नलिखित हैं:

मुख्य गतिविधियाँ

1. **क्षेत्रीय सर्वे एवं ऑडियो वीडियो प्रलेखन**
   - अरुणाचल प्रदेश के लोहित जिले के *संगकन फेस्टिवल* का ऑडियो वीडियो प्रलेखन (18-28 अप्रैल, 2008)

2 कार्यशाला, संगोष्ठी एवं सभाएँ

- कैन, माणिपुर में बसन्त रास फेस्टिवल के प्रलेखन हेतु कार्यशाला (20 अप्रैल, 2008)
- इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली में भारत के जनजाति कलाकारों की 15 दिनों की एनीमेशन कार्यशाला (23 जुलाई, 2008)
- अरली हिस्ट्री ऑफ माणिपुर पर संगोष्ठी (जुलाई, 2008)
- स्पिरिचुअल वैल्यु ऑफ मैटीरियल आर्ट ऑफ मणिपुर (अगस्त, 2008)
- इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में उत्तर-पूर्व क्षेत्र के विशिष्ट विद्वानों व्यक्तियों की दो दिन की सभा (7 से 8अगस्त, 2008)
- असम गुवाहाटी, श्रीमन्त शंकरदेव कलाक्षेत्र में *स्पिरिट ऑफ नार्थ-ईस्ट इण्डिया* पर दो दिवसीय गहन विचार-विमर्श हुआ (28-29 अगस्त, 2008)।

3) गतिविधियाँ/उत्सव/कार्यक्रम

- दिल्ली में *परफैक्ट हेल्थ मेला* हार्ट केयर फाउण्डेशन ऑफ इण्डिया विद द ट्राईब्ल हिलर ऑफ एन ई एवं उत्तरांचल (17 से 26 अक्तूबर, 2008) के सहयोग से आयोजित किया गया जिसमें लगभग 1500 व्यक्ति लाभान्वित हुए ।

- पूर्वोत्तरी : स्पिरिट ऑफ नार्थ-ईस्ट 10 से 18 जनवरी, 2009 को आयोजित किया गया । इस गतिविधि में सभी सात राज्यों के क्षेत्रों ने चार प्रदर्शिनियों , संगोष्ठी, विशेष व्याख्यान एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ प्रस्तुत की । इस कार्यक्रम के द्वारा यह दर्शाने का प्रयास किया गया कि उत्तर-पूर्व के दृश्यमाण विविधताएँ और अस्मिताएँ वस्तुतः एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। साथ ही, पूर्वोत्तर भारत के वैराट्य और गहनता, मानव तेज का एक देहीप्यमान संगम है।

1. प्रदर्शनियाँ : शिल्प परम्पराओं एवं फोटोग्राफ्स के माध्यम से समुदायों की कला एवं शिल्प परम्परा, पर्यावरण प्रबन्धन, आस्था प्रणाली, समग्र पारम्परिक ज्ञान पद्धतियों से इन चार प्रदर्शनियों पर प्रकाश डाला गया । ये चार प्रदर्शिनियाँ थीं- *बुद्धिज्म इन नार्थ-ईस्ट, विद्या द बुक एग्जिविशन, हस्तलिपि : ए मल्टी-मीडिया रिप्रजेन्टेशन ऑन मैन्यूस्क्रिप्ट फ्रॉम द नार्थ-ईस्ट एण्ड मैंटल एटलस : आर्ट एण्ड कल्चर ऑफ द नार्थ-ईस्ट* ।
2. उत्तर-पूर्वी संस्कृति : उत्तरी पूर्वी संस्कृति के अध्ययन एवं व्याख्यापन हेतु ऐतिहासिक-परिप्रेक्ष्य निर्माण संगोष्ठी में निम्न विषयों पर विचार-विर्मश हुआ। कला के माध्यम से संस्कृति की व्याख्या, पारिस्थितिक एवं सांस्कृतिक विनिमय, धार्मिक प्रक्रिया एवं सांस्कृतिक-परिवर्तन पारम्परिक नियमों के रक्षक आदि ।

3. विभिन्न क्षेत्रों से प्रख्यात इतिहासकारों, लोकवार्तिकों, पत्रकारों एवं प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा विशेष व्याख्यान शृंखला में उत्तर-पूर्व से सम्बन्धित, क्षेत्र के सांस्कृतिक सिद्धान्त के विकास की दिशा में मदद के लिए मुद्दों को सम्बोधित किया ।

4. सांस्कृतिक कार्यक्रम : अरुणाचल प्रदेश, असम मणिपुर, मिजोरम, नागालैण्ड, सिक्किम एवं त्रिपुरा सभी आठ उत्तरी-पूर्व राज्यों द्वारा सहभागिता की गई जिसमें उनके सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से विभिन्न समुदायों एवं उनकी सांसरिक अभिव्यक्ति एवं विचारों को प्रदर्शित किया गया ।

- दिल्ली एवं उसके आस-पास रह रहे माणिपुरी लोगों ने इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली में सायं काल 14 मार्च, 2009 को सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए ।

- एथनो इकोलॉजी ऑफ नार्थ-ईस्ट के तहत एक प्रारूप रिपोर्ट (1901 से 2001 मिजोरम की पाँच मुख्य जनजातियों की जनगणना, डाटा पर आधारित तैयार की गई।

कलादर्शन

कलादर्शन प्रभाग इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विभिन्न प्रभागों के कार्यकलापों के प्रस्तुतीकरण एवं नानाविध कलाओं के बीच सृजनात्मक एवं समालोचनात्मक संवाद हेतु मंच उपलब्ध करवाता है। अपने कार्यक्रमों के माध्यम से प्रभाग ने अभिव्यक्ति और प्रस्तुति की एक अतुलनीय शैली विकसित की है। यह प्रदर्शनियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों एवं व्याख्यानों का आयोजन करता है। इस विभाग के अन्तर्गत डायस्पोरा सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं बच्चों के लिए बाल जगत के कार्यक्रम आते हैं।

प्रदर्शनियाँ

1. दिल्ली : राईज़िंग अबव रुइन्स् 4 से 19 जून, 2008 से श्री रंजन कुमार सिंह द्वारा मध्ययुगीन दिल्ली के एवं उसके पुरातत्त्व विज्ञान के इतिहास पर फोटोग्राफ्स एवं दिल्ली के समृद्ध इतिहास की झलकियों पर टिप्पणियाँ दी गई ।

2. मिस्ट ऑफ द माउण्टेन : 17 जून, 2008 को लालबहादुर शास्त्री प्रशासन अकादमी में इ०गा०रा०क०केन्द्र के अभिलेखागार से केशवचन्द्र द्वारा लिए गए मिस्ट ऑफ द माउण्टेन छायाचित्रों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई।

3. कौथिक गढ़वाल फेस्टिवल : 20 अक्तूबर, 2008 को माटीघर में गढ़वाल के छायाचित्रों की प्रदर्शनी आयोजित की गई। यह केन्द्र में कौथिक गढ़वाल उत्सव के अन्तर्गत आयोजित किया गया । छायाचित्रों के द्वारा इस क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाया गया, केन्द्र ने अपने अभिलेखागार के लिए इनमें से कुछ छायाचित्र अर्जित भी किए ।

4 *इण्डियन आर्किटेक्चर थ्रू दे लेंस ऑफ प्रो० एन०के०बोस* : 12 से 26 दिसम्बंर, 2008 को *इण्डियन आर्किटेक्चर थ्रू दे लेंस ऑफ प्रो० एन०के०बोस* पर छायाचित्रों की प्रदर्शन लगाई ।

5. *पूर्वोत्तरी - स्पिरिट ऑफ द नार्थ-ईस्ट* - इस उत्सव के रूप में चार प्रदर्शिनियाँ रखी गई । वे थीं- 1) द मैंटल एटलस : आर्ट एण्ड कल्चर ऑफ द नार्थ ईस्ट 2) बुद्धिज़्म इन द नार्थ -ईस्ट 3) हस्तलिपि : ए मल्टी मीडिया प्रजेन्टेशन ऑन मैन्यूस्क्रिप्ट्स फ्रॉम द नार्थ-ईस्ट एवं 4) विद्या : एन एग्ज़िबिशन ऑफ बुक्स ऑन द नार्थ-ईस्ट। यह प्रदर्शनी 10 जनवरी से 10 फरवरी, 2009 तक चली।

6. कश्मीर फेस्टिवल : कश्मीर उत्सव के दौरान 23 फरवरी से 2 मार्च, 2009 तक निम्नलिखित प्रदर्शनियाँ आयोजित की गईं 1) मैटीरियल कल्चर ऑफ कश्मीर 2) इण्डिजिनस आर्किटेक्चर ऑफ कश्मीर 3) कंटेम्प्ररी आर्ट ऑफ कश्मीर 4) मोनेस्ट्रीज एण्ड लाइफ ऑफ लद्दाख तथा 5) डिजिटल फोटो-डॉक ऑफ मैन्यूस्क्रिप्ट हैरिटेज ।

अन्य संस्थानों के सहयोग से लगाई गई प्रदर्शिनियाँ इस प्रकार से हैं:-

7. अफगानी महिला कलाकारों द्वारा 8 से 14 सितम्बर, 2008 को आईसीसीआर के संयुक्त तत्त्वावधान में छायाचित्रों की प्रदर्शनी आयोजित की ।

8. हिस्ट्री इन द मेकिंग- कुलवन्त रॉय का दृश्य अभिलेख 4 से 21 अक्तूबर, 2008 को आईसीसीआर के संयुक्त तत्त्वावधान में छायाचित्रों की प्रदर्शनी आयोजित की गई ।

9. एन्वल आर्ट - 1 से 8 दिसम्बर, 2008 को मयूर विहार सलवान पब्लिक स्कूल ने प्रदर्शनी आयोजित की ।

10. अरब फाइन आर्टस एण्ड बुक एग्ज़िबिशन - 4 से 7 दिसम्बर, 2008 को इण्डिया-अरब फोरम पार्टनर्शीप थ्रू कल्चर के संयुक्त तत्त्वावधान में यह प्रदर्शनी आयोजित की गई ।

11. लाइफ एण्ड एन्वायरमेंट : 29 दिसम्बर, 2008 से 8 जनवरी, 2009 को सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के फोटो विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में छाया चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई।

12. ऑन द एज-एन एग्ज़िबिशन ऑफ इण्डिजिनस आर्ट फ्रॉम फॉर नार्थ क्वीन्सलैंड की प्रदर्शनी 30 जनवरी से 5 फरवरी, 2009 को आस्ट्रेलिया-भारत परिषद्, आस्ट्रेलिया उच्च आयोग के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित की गई ।

13. *स्लोवाक कंटेम्प्रेरी ग्राफिक आर्ट* - 13 से 20 फरवरी, 2009 को आईसीसीआर के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित किया गया ।

14. *यंग थोअट्स* - भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, बंगलादेश, श्री लंका एवं स्वीडन के बच्चों द्वारा रेखाचित्रों एवं चित्रकलाओं की प्रदर्शनी टेलस आर्ट ऑरगानिजेशन, स्वीडन के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित की गई ।

15. *इमेजेस ऑफ इण्डिया* - मॉस्को की कलाकार कु० ऐलिना फडोरोवास्क्या के छायाचित्रों की प्रदर्शनी आईसीसीआर के संयुक्त तत्त्वावधान में 14 से 19 मार्च, 2009 को आयोजित की गई ।

16. *पेंटिंग्स ऑफ स्कल्पचर्स* - कोलकाता की विख्यात कलाकार रमिता भादुरी के छायाचित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन आईसीसीआर के सहयोग से 24 से 29 मार्च, 2009 को किया गया।

17. *ओम पर आधारित* - श्री के०ए०फ्रांसिस द्वारा आयोजित 23 से 26 मार्च, 2009 को आयोजित किए गए । 23 मार्च, 2009 को *ओम* पुस्तक का भी विमोचन किया गया।

व्याख्यान/संवाद/प्रदर्शन

1. 9 मई, 2008 को त्रिनिदाद एण्ड टबैगो के हिन्दूधर्म एवं भारतीय संस्कृति के मूर्धन्य विद्वान् श्री रवीन्द्र महाराज से विचार-विमर्श का आयोजन किया गया ।

2. 16 मई, 2008 को गाजन ऑफ बंगाल व्याख्यान एवं प्रस्तुती श्री देबाशीष सरकार द्वारा एवं डॉ० महुआ मुखर्जी द्वारा अभिनय का आयोजन किया गया ।

3. 4 सितम्बर, 2008 को प्रो० क्रिस्तोफर पिने का व्याख्यान फोटोग्राफी कम्स टू इण्डिया आयोजित किया गया ।

4. 14 अक्तूबर, 2008 को प्रो० हंस बेल्टिंग का व्याख्यान अरब साइंस एण्ड रिनेसन्स आर्ट एक्रॉस कल्चरल हिस्ट्री ऑफ दे गेज़ प्रस्तुत किया गया ।

5. 20 मार्च, 2009 को भारतीय गाँव की कलाओं में 20 महिलाओं के पार्श्वचित्रों डॉटर्स ऑफ इण्डिया पर प्रो० स्टिफन पी० हायलर ने सचित्र चर्चा की ।

6. 14 से 22 अक्तूबर, 2008 से नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के सहयोग से श्री मोहन महर्षि का नाटक *मैं इंस्ताँबुल हूँ* खेला गया ।

7. 4 दिसम्बर, 2008 को जामिया मिलिया इस्लामिया के ललित कला संकाय तथा देशों के कलाकारों की एक कार्यशाला आयोजित की गई ।

8. 12 से 14 दिसम्बर, 2008 से देहली इण्टरनेशनल आर्ट्स फेस्टिवल के सहयोग से लोक मेला रंग-ए-क़सब का आयोजन किया गया ।

9. 22 फरवरी से 8 मार्च, 2009 को दस्तकार ए सोसाइटी फ्रॉर क्राफ्ट्स एण्ड क्राफ्ट्सपीपल के सहयोग से बसन्त बाज़ार का आयोजन किया गया ।

विशेष कार्यक्रम

19 नवम्बर को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रतिष्ठादिवस के अवसर पर भरतनाट्यम् नृत्यांगना श्रीमती गीता चन्द्रन् एकम् सत् पर एवं श्रीमती अनिता सिंघवी ने सूफी संगीत प्रस्तुत किया।

अर्जन

कलादर्शन विभाग ने निम्नलिखित कलाकृतियाँ अपने अभिलेखागार हेतु अर्जित कीं।

1. मार्च, 2008 में मध्य भारत के लोक कलाकारों ने कार्यशाला में भाग लिया गया, इनके माध्यम से 236 कला वस्तुओं का निर्माण किया गया।

2. श्री वी रघुराम अय्यर द्वारा उपहारस्वरूप तंजौर की छः कलाकृतियाँ प्रदान की गईं ।

3. आन्ध्रप्रदेश के ए०पी०गवर्नमेंट ओरियण्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट के निदेशक प्रो० जयधीर तिरुमाला रॉव से उपहारस्वरूप दो कलाकृतियाँ प्राप्त हुईं।

4. रामकथा कार्यक्रम की कलाकृतियाँ ।

5. उत्तर-पूर्व कार्यक्रम की कलाकृतियाँ ।

डायस्पोरा सांस्कृतिक कार्यक्रम

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की तीसरी डायस्पोरा सांस्कृतिक सभा एवं प्रवासी भारतीय दिवस संयुक्त रूप से जनवरी, 2009 में पुडुचेरी एवं चैन्नई में आयोजित किए गए । इस वर्ष का केन्द्र बिन्दु *ओशनिक कल्चर ऑफ इण्डिया एण्ड डायस्पोरा* था । दो पुडुचेरी में एवं एक चैन्नई में कुल तीन प्रदर्शनियाँ आयोजित की गई । प्रदर्शनी के विषय थे:- 1. ओशनिक कल्चर ऑफ इण्डिया 2. इण्डियन डायस्पोरा इन ओवरसीज़ फ्रेंच टेरोट्रिज ऑफ गादेलोप, मार्तिनीक्, रियूनियन एवं फ्रेंच गयाना 3. आईजीएनसीए डायस्पोरा पर्सपेक्टिव्स ।

ओशनिक कल्चरल एक्सचेंजेस इन कोरामण्डल कॉस्ट एण्ड डायस्पोरा विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया । संगोष्ठी में प्रकाशन हेतु पेपर संकलित किए गए। इस कार्यक्रम में 15 फिल्म दिखाई गई एवं पाँच दिनों तक संगीत एवं नृत्य का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया ।

क्षेत्रीय केन्द्र

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के तीन क्षेत्रीय कार्यालय वाराणसी, गुवाहाटी एवं बैंगलुर में अवस्थित हैं। केन्द्र का वाराणसी कार्यालय कलाकोश विभाग से सम्बन्धित मुख्यत: शैक्षाणिक कार्य करता है। गुवाहटी कार्यालय सम्पूर्ण उत्तर -पूर्वी क्षेत्र का एक क्षेत्रीय कार्यालय है जो कि सम्पूर्ण कार्य व्यापक अनुसंधान सर्वेक्षण एवं प्रलेखनीय कार्य क्षेत्रों का जीवन शैली अध्ययन (जनपद-सम्पदा विभाग) एवं बैंगलुरू कार्यालय केन्द्र की दक्षिण भारत की गतिविधियों का आमुख है। तीनों कार्यालयों की संक्षिप्त रिपोर्ट निम्नलिखित है ।

क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी

कलातत्त्वकोश के संदर्भ कार्ड

वाराणसी कार्यालय में यह कार्य सतत् रूप से चल रहा है इनमें सम्बन्धित ग्रन्थों की तैयार लिस्टों से संदर्भ कार्ड तैयार किए जाते है। इन पारिभाषिक शब्दों को कलातत्त्वकोश के लिखित लेखों में प्रयुक्त किया जाता है। इस वर्ष, 2974 नए कार्ड्स उनके संदर्भ, परिभाषाएँ एवं उनका अनुवाद किया जाता है । ये मुख्यत: खण्ड 7,8 एवं 9 से सम्बन्धित है । इन कार्डों के शीघ्र संदर्भ हेतु इनका कम्प्यूटरीकरण किया जा रहा है ।

अन्य कार्यक्रम

30 से 31 मार्च, 2008 को *श्रीहर्ष : द पोएट एण्ड फिलॉसोफर* पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, विश्व के सभी देशों के प्रसिद्ध विद्वानों एवं शैक्षणिक ने इस संगोष्ठी में भाग लिया । चुनिन्दा शोध पत्रों को संकलित किया जा रहा है।

20 से 23 जनवरी, 2009 से वाक्यपदीय पर चार दिवसीय संवाद का आयोजन किया गया इसमें वाक्यपदीय के विभिन्न पहलुओं पर 25 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए । इन शोधपत्रों को वाक्यपदीय खण्ड में प्रकाशन किया जाएगा।

17 से 18 मार्च, 2009 को नाट्य एवं संगीत विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया । यह संगोष्ठी कलातत्त्वकोश के खण्ड 10 से सम्बन्धित है ।

क्षेत्रीय कार्यालय ने कार्यालय के शैक्षणिक अकादमी कार्यों से सम्बन्धित कुछ व्याख्यानों का भी आयोजन किया । कुछ व्याख्यान निम्नलिखित है :-

1. ए फ्यू मोटिफस इन इण्डियन आर्ट - प्रो० एस०डी०त्रिवेदी 18 जुलाई, 2008
2. प्रस्तार - प्रो० आर० सान्याल, 14 फरवरी, 2009
3. व्याल/इहामृग - प्रो० एस०डी०त्रिवेदी, 14 फरवरी, 2009

उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, गुवाहाटी

गुवाहाटी स्थित उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र की स्थापना तीन वर्ष पूर्व इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के उस क्षेत्र से सम्बन्धित परियोजनाओं को पूर्ण करने के लिए की गई थी। यह एक अवैतनिक संन्वायक की देखरेख में गुवाहाटी विश्वविद्यालय के एन्थ्रोपोलोज़ी विभाग के सहयोग से कार्य करता है।

इंटैंजिबल कल्चरल हैरिटेज : इण्टर कम्युनिटी रिलेशंस थ्रू ट्रेडिशनल बार्टर एन ट्रेड इन ऐनुअल फेयर्स इन कामरुप एण्ड मोरीगाँव डिस्ट्रिक इन आसाम नामक शोध परियोजना पर कार्य चल रहा है। क्षेत्रीय कार्य पूर्ण चुका है तथा रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

रिसोर्स पोटेंशियल एण्ड प्रोस्पेक्टिव युटिलाइज़ेशन इन आसाम सेगमेंट ऑफ एशियन हाईवे एक अन्य परियोजना है जिसे पूर्ण करने में क्षेत्रीय कार्यालय कार्यरत है। यह राष्ट्रीय राजमार्ग नं० 36 एवं 37 से मिलता हुआ, प्रस्तावित एशियन राजमार्ग नं०1 के आसाम भाग से मिलता है। अगस्त 298 तक राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 36 के अन्तर्गत आने वाले सभी गाँवों एवं अन्य क्षेत्रों का कार्य पूर्ण कर दिया गया था ।

क्षेत्रीय केन्द्र ने जनवरी, 2009 में दिल्ली में आयोजित पूवोत्तरी : स्पिरिट ऑफ नार्थ-ईस्ट फेस्टिवल के आयोजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी ।

दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, बैंगलोर

दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र ने 25 अप्रैल, 2008 को *वैचारिक* सत्र का आयोजन किया । दक्षिण भारत की सांस्कृतिक धरोहर से सम्बन्धित परियोजनाओं के लिए इस सभा में लगभग 40 विद्वानों शिक्षाविदों, उप-कुलपतियों एवं विभिन्न कला संस्थानों के अध्यक्षों ने भाग लिया । परियोजनाओं की चुनी हुई लिस्ट तैयार की गई एवं दिल्ली कार्यालय से अनुमोदन प्रतिक्षित है।

टेक्स्ट टू टूल विषय पर आयोजित कार्यशालाओं की शृंखला में दूसरी एवं तीसरी कार्यशाला सितम्बर 2008 एवं फरवरी-मार्च 2009 में आयोजित की गई । इन कार्यशालाओं के दौरान, काश्यप शिल्प के 6 विग्रहों को उकेरा गया । इस कार्यशाला का उद्देश्य मूल ग्रन्थों के अनुसार मूर्तिकला को प्रोत्साहित करना है।

केन्द्र ने कला प्रतिष्ठान रामसन्स के सहयोग से 5 से 6 मई, 2008 तक पारम्परिक मण्डल खेल की प्रदर्शनी *क्रीडा कौशल्य* का आयोजन किया ।

दक्षिण क्षेत्र केनद्र ने 337 ई० से 1000 ई० की अवधि के 739 अभिलेखों का संग्रह किया । इन्हें वर्षानुसार वर्गीकृत किया गया एवं संक्षिप्त नोट्स तैयार किए गए । द्रविडिय रिलेशन्स एण्ड डैल्पमेंट ऑफ स्क्रिप्ट, लैंग्वेज परियोजना के अन्तर्गत इन्हें प्रकाशन के रूप में निकाला जाएगा।

फैकल्टी ऑफ आर्किटेक्चर, सीईपीटी, अहमदाबाद के संयुक्त तत्वावधान में श्रवण बेलगोला के सांस्कृतिक मानचित्र के क्षेत्रीय कार्यों को पूरा किया गया। यह परियोजना नवम्बर, 2007 में आरम्भ की गई थी ।

दक्षिण क्षेत्र केन्द्र के तीन प्रकाशन अंतिम चरण के विभिन्न स्तरों पर हैं

1. मंदिर परम्पराएँ एवं मेलकोटे के उत्सव
2. कला अनुभव : रस-ध्वनि-औचित्य-वक्रोक्ति के सिद्धान्त का प्रमुख कला स्वरूपों पर अनुप्रयोग।
3. कांचीपुरम के भित्ति-चित्र

प्रलेखन

श्रवण बेलगोला में महामस्तकाभिषेक का श्रव्य-दृश्य प्रलेखन का कार्य सम्पन्न हुआ ।
आठ पटल क्रीडाओं का विवरण उनके उद्गम एवं विकास के साथ प्रलेखित हुआ ।

अर्जन

दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र एसआरसी ने श्री श्रीनिवासराजू से उपहारस्वरूप 5000 पुस्तकें प्राप्त की।
इस वर्ष कार्यालय ने भी 4.17 लाख कीमत की पुस्तकें मंगवाई ।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

सामूहिक ज्ञान राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन भारत की विशाल पाण्डुलिपि धरोहर में संरक्षित ज्ञान परम्पराओं का उद्धार करने का सुव्यवस्थित प्रथम राष्ट्रीय प्रयास है। पाण्डुलिपियाँ केवल ऐतिहासिक अभिलेख नहीं अपितु दर्शन, विज्ञान, साहित्य, कलाओं तथा भारत की बहुविध विश्वास-पद्धतियों का सदियों पुराना ज्ञान भण्डार हैं । ये विचारकों की परम्पराओं का प्रतिनिधित्व करती हैं । इस मिशन की स्थापना भारत सरकार ने सन् 2002 में पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय के अन्तर्गत की थी तथा इ०गा०रा०क०केन्द्र को इसका नोडल कार्यालय बनाया गया। भारत के सभी भागों में विद्यमान पाण्डुलिपियों को जनसामान्य हेतु उपलब्ध करवाना तथा इसके माध्यम से इस साँस्कृतिक धरोहर के विषय में जागरूकता फैलाना, शिक्षा एवं शोध कार्यों में पाण्डुलिपियों के प्रयोग को बढ़ावा देना इसके प्रमुख उद्देश्य हैं।

अपने उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति हेतु, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन पाण्डुलिपियों के अभिज्ञान, अन्वेषण, संरक्षण, परिरक्षण, प्रलेखन तथा डिजिटाइज़ेशन की सतत् प्रक्रिया में संलग्न है। यह पूरे देश में फैले विभिन्न प्रकार के केन्द्रों की सहायता से काम करता है। देश भर में, 46 पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र, 33 पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र, 42 पाण्डुलिपि सहभागी केन्द्र तथा 300 पाण्डुलिपि संरक्षण सहभागी केन्द्र हैं। पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र पाण्डुलिपियों का अभिज्ञान, अन्वेषण तथा सूचना प्रलेखन के मुख्य केन्द्र हैं। अपना स्वयं

का पाण्डुलिपि संग्रह रखने वाले पाण्डुलिपि सहभागी केन्द्र भी अपनी पाण्डुलिपियों की देखभाल स्वयं करते हैं पर ये बृहत्तर पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों के अंगभूत ही हैं।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की मुख्य गतिविधियाँ निम्नलिखित है :-

1. प्रलेखन
   - पाण्डुलिपियों के नेशनल इलेक्ट्रोनिक डाटाबेस का सृजन ।
   - पाण्डुलिपियों के राष्ट्रीय सर्वेक्षण एवं सर्वेक्षणोपरान्त कार्यक्रमों का आयोजन करना ।
   - पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों के विस्तार एवं सशक्तीकरण
   - पाण्डुलिपि सहभागी केन्द्रों को सहायता देना
   - विदेशी संग्रहो का प्रलेखन

2. पाण्डुलिपि संरक्षण एवं प्रशिक्षण
   - एमआरसी के पाण्डुलिपि संग्रहों एवं अन्य पाण्डुलिपि भंडारों का संरक्षण ।
   - एमसीसी का सृजन एवं एमसीसी नेटवर्क का प्रसार
   - मैनुस्क्रिप्ट कंजर्वेशन पार्टनर सेन्टरों (एमसीपीसी) का सृजन
   - नेशनल रिर्सोस टीम ऑफ कंजर्वेटर्स का सृजन
   - शोध कार्यक्रमों को बढ़ावा देना ।
   - निवारक संरक्षण प्रशिक्षणों का आयोजन करना ।
   - दुर्लभ सहायक पदार्थों के संरक्षण पर कार्यशालाओं का आयोजन करना ।
   - क्षेत्रीय प्रयोगशालाओं की स्थापना करना ।
   - एमसीपीसी कार्यशालाओं का आयोजन करना
   - सर्वेक्षण एवं सर्वेक्षणोपरान्त को सहयोग ।
   - डिजिटाइज़ेशन में सहयोग ।

3. पाण्डुलिपि शास्त्र एवं पुरालिपिशास्त्र पर कार्यशालाएँ
   - पाण्डुलिपिशास्त्र एवं पुरालिपिशास्त्र कार्यशालाएँ एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना।
   - गुरुकुल अध्येतावृत्ति कार्यक्रमों के माध्यम से समालोचनात्मक सम्पादन तैयार करना।
   - भारतीय विश्वविद्यालयों में पाण्डुलिपिशास्त्र के पाठ्यक्रमों के पाठन का प्रयास करना ।

4. डिजिटाइज़ेशन के माध्यम से प्रलेखन
   - दुर्लभ पाण्डुलिपियों का डिजिटाइजेशन
   - डिजिटल पाण्डुलिपि लाइब्रेरी का सृजन
   - डिजिटाइज़ेशन हेतु निर्देशन एवं मानक तैयार करना

5. अनुसन्धान एवं प्रकाश
   - तत्त्वबोध व्याख्यानों के संग्रह का प्रकाशन
   - समीक्षिका (सेमिनार पत्रों के संग्रह) का प्रकाशन
   - समरक्षिका-सेमिनार पत्रों के संग्रह का प्रकाशन
   - कृतिबोध- पाण्डुलिपियों के समालोचनात्मक सम्पादनों का प्रकाशन
   - विज्ञान निधि राष्ट्रीय कोष कैटलॉग का प्रकाशन
   - कैटलॉग का प्रकाशन

6. प्रसार कार्यक्रम
   - कृति रक्षण-राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की मासिक पत्रिका का प्रकाशन ।
   - तत्त्वबोध सार्वजानिक व्याख्यान श्रृंखलों के अन्तर्गत दिल्ली एवं अन्य शहरों में व्याख्यानों का आयोजन करना ।
   - संगोष्ठी का आयोजन
   - विज्ञान निधि-भारतीय पाण्डुलिपि संग्रह कार्यक्रम
   - मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर यूनेस्को हेतु नामांकन
   - लिविंग वर्ड्स : स्कूली कार्यक्रम : युवाओं के लिए पाण्डुलिपि प्रसार
   - युवाओं के लिए राष्ट्रीय वाद-विवाद प्रतियोगिता

प्रलेखन

इस वर्ष राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने 2,80,913 पाण्डुलिपियों की सूचना प्राप्त की । इनमें से 53, 218 की प्रविष्टि कम्प्यूटर में हो चुकी है। विद्यमान डाटा की सहायता से, प्रविष्टि संख्या 2,3 एवं 118 में शुद्धियाँ की गई । राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन पर 7.5 लाख डाटा अपलोड किए गए और अब कुल प्रविष्ट डाटा की संख्या 1.75 लाख हो गई ।

सर्वेक्षणोपरान्त (पोस्ट-सर्वे)

यह एक व्यापक कार्यक्रम है जो मिशन के प्रलेखन कार्यों में गति लाने के लिए राष्ट्रीय सर्वेक्षण को देखता है। राष्ट्रीय सर्वेक्षण का कार्य राज्यों में पाण्डुलिपि कोषों की जानकारी प्राप्त करना है तथा सर्वेक्षणोपरान्त वहाँ की वैयक्तिक पाण्डुलिपि संग्रहों का प्रलेखन करना है। सर्वेक्षणोपरान्त कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रशिक्षित विद्वानों द्वारा पाण्डुलिपियों के पहचाने गए भण्डारों को पुनः देखते हैं यह जानने के लिए कि राष्ट्रीय सर्वेक्षण के समय कुछ छूट तो नहीं गया। यह प्रत्येक राज्य में किया जाता है जहाँ राष्ट्रीय सर्वेक्षण किया जा चुका है। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि डेटा बेस बनाने के लिए यह अत्यआवश्यक है।

इस वर्ष पोस्ट सर्वे के लिए निम्नलिखित जिलों को लिया गया :-

उत्तर प्रदेश	:	1. संत रविदास नगर 2. उन्नाव 34000 डाटा संग्रहित
हिमाचल प्रदेश	:	1. चम्बा 2. हमीर पुर 5258 डाटा संग्रहित
कर्नाटक	:	1. बीजापुर 2. बेलारी 20081 डाटा संग्रहित बिहार से 8741 तथा केरल से 25,415 डाटा संग्रहित किए गए ।

त्रिपुरा, आन्ध्रप्रदेश एवं राजस्थान में पोस्ट सर्वे का कार्य आरम्भ किया गया ।

संरक्षण

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन नियमित रूप से संरक्षण पर कार्यशालाएँ एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है । अधिकांश प्रतिभागी अभिलेखागार, लाइब्रेरी एवं अन्य संस्थानों से आते हैं। इस वर्ष, ये कार्यक्रम नई दिल्ली (जून 2008), भुवनेश्वर(नवम्बर 2008), तिरुवनन्तपुरम (दिसम्बर 2009) एवं मैसूर (फरवरी 2009) में आयोजित किए गए ।

डिजिटाइज़ेशन

डिजिटाइज़ेशन आरम्भ करने के उपरान्त, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने 25160 पाण्डुलिपियों का (3835816 पृष्ठ) डिजिटाइज़ेशन का कार्य सम्पन्न किया । इन्हें 7708 डीवीडी में स्टोर किया गया । 1 अप्रैल, 2008 से 31 मार्च, 2009 तक पाण्डुलिपियों के डिजिटाइज़ेशन का विवरण निम्नलिखित हैं:-

एजेन्सी	संस्थान पाण्डुलिपियों	डिजिटाइज़्ड पृष्ठों की संख्या की संख्या	डिजिटाइज़्ड	स्थिति
सीबीएसएल	ओएसएम, बीबीएसआर	3443	410000	-
सीबीएसएल	केकेएचएल, गुवाहाटी	2000	158000	कार्य पूर्ण,लम्बित डाटा
एसआईजीएमए	गोड़ यूनिवर्सिटी, सागार	1010	117603	-

एसआईजीएमए	आनन्द आश्रम, पुणे	1227	194592	हॉल ही में आरम्भ
एडीइए	हिमाचल			
इनफोटेक	अकादमी संस्थान	257	56000	–
एडीइए	वृंदावन अनुसन्धान	2700	150000	हॉल ही में आरम्भ
इंफोटेक				संस्थान
एसीआई				एशियाई अध्ययन
इंफोकॉम	संस्थान, चेन्नई	500	150000	–
एसीआई	फ्रेंच संस्थान,			
इंफोकॉम		502	170661	–
एसीआई	कुंडाकुंडा			
इंफोकॉम	इंदौर	–	–	हॉल ही में आरम्भ
कुल		**10362**	**1226170**	

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने नेशनल डिजिटल मैनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी के लिए सॉफ्टवेयर का विकास किया । पाण्डुलिपियों को शीर्षक, लेखक, विषय, भंडार, भाषा, लिपि, अवधि एवं सामग्री द्वारा खोजा जा सकता है। डाटा को चित्रों के आधार पर भी खोजा जा सकता है ।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने प्रसिद्ध विद्वानों से चर्चा के उपरान्त ई-ग्रन्थावली पाण्डुलिपि डाटा विवरण की पविष्टि हेतु सॉफ्टवेयर के अनुवाद 2.0 से 3.0 (एन आई सी द्वारा विकसित) अपग्रेड किया ।

अनुसन्धान एवं प्रकाशन

अप्रकाशित दुर्लभ एवं महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों को प्रकाश में लाने एवं पाण्डुलिपियों एवं पाण्डुलिपि शास्त्र से सम्बन्धित गंभीर शोध कार्यक्रमों को प्रेरित करना एक महत्त्वपूर्ण उपांग है ।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन से प्रकाशित पुस्तकें
तत्त्वबोध : खण्ड 1 एवं 2
समरक्षिका : खण्ड 1 एवं 2
समीक्षिका : खण्ड 1 एवं 2
कृतिबोध : खण्ड 1

उपर्युक्त पुस्तक समीक्षिका खण्ड-2 (फरवरी, 2006 दिल्ली में आयोजित महाभारत विषयक संगोष्ठी में पढ़े गए शोध पत्रों का संग्रह) एवं तत्त्वबोध खण्ड-2 वर्ष 2008-2009 में प्रकाशित किए गए ।

सार्वजनिक प्रसार

मिशन ने वर्ष, 2005 में सार्वजनिक प्रसार कार्यक्रम आरम्भ किया । इस कार्यक्रम से मिशन, व्याख्यानों, संगोष्ठियों, प्रकाशनों तथा स्कूल एवं विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए विशेष रूप से रचित कार्यक्रमों के माध्यम से पाण्डुलिपियों में मौजूद ज्ञान के विभिन्न स्वरूपों को जनता के समक्ष लाना है।

तत्त्वबोध व्याख्यान

यह एक मासिक व्याख्यान शृंखला है जिसमें पूर्व निर्धारित विषयों पर विभिन्न विद्वान् अपने व्याख्यान देते हैं। इस शृंखला का मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञान पद्धति के प्रमुख विद्वानों को एक ऐसे मंच पर लाना है जहाँ वे जनता के सामने अपने विचार को रख सकें तथा उनपर चर्चा कर सकें। 2005 से 63 व्याख्यान इस कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित किए जा चुके हैं। इस वर्ष के व्याख्यान रिपोर्ट के अंत में संलग्नक में प्रदत्त है।

कृतिरक्षण

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की द्विमासिक पत्रिका कृरितरक्षण का आरम्भ अगस्त, 2005 में किया गया । तब से जून, 2007 तक 12 खण्ड नियमित रूप से प्रकाशित हो चुके है । आरम्भ में अगस्त, 2005 में केवल 2000 प्रतियाँ मुद्रित हुईं। परन्तु दो वर्ष के अन्दर ही इसकी मांग बढ़कर 8000 प्रतियों तक पहुँच गई। सितम्बर, 2007 से नौ खण्डों में से केवल तीन खण्ड ही 18 महीने में प्रकाशित किए जा सके।

सूत्रधार

कार्मिक

आईजीएनसीए के अधिकारियों की एक सूची अनुलग्नक पर दी हुई है।

सेवा एवं आपूर्ति विभाग

यह अनुभाग कार्यालय के सभी उपकरणों के रखरखाव और मरम्मत के लिए उत्तरदायी है। इसमें आतिथ्य सत्कार, लेखन-सामग्री के वितरण, यातायात, सीजीएचएस और अन्य कार्यालय देखभाल कार्यों के लिए उप-प्रकोष्ठ है।

आईजीएनसीए भवन परियोजना

1. पूर्ण हुए भवन 1. कलानिधि, कलाकोश, सम्मिलित संसाधन 'ए'; और भवन 2. सूत्रधार, भूस्तर तक भूतल पार्किंग 'बी' बचे हुए कार्यों को पूर्ण करने के लिए सी०पी०डब्ल्यू०डी० द्वारा दिया गया आकलन इस प्रकार है:-

	राशि (रु०) (करोड़ों में)
भवन नं०1 में शेष सिविल एवं इलेक्ट्रिकल कार्य (कलानिधि, कलाकोश एवं सम्मिलित संसाधन -क)	7.17 करोड़
भवन नं०2 में शेष सिविल एवं इलेक्ट्रिकल कार्य (सूत्रधार एवं भूतल पार्किंग-बी)	19.42 करोड़
कम्पाउण्ड वाल निर्माण	1.66 करोड़
कुल योग	**28.25 करोड़**

यह राशि सी०पी०डब्ल्यू०डी० को दी जा चुकी है।

कार्य पूर्ण होने की निर्दिष्ट समय सीमा सी०पी०डब्ल्यू०डी० द्वारा राशि देने के दिन से (फरवरी, 2008 से) 18 माह अनुमानित की गई है। सी०पी०डब्ल्यू०डी० द्वारा जमा किए गए प्रगति रिपोर्ट के अनुसार मार्च, 2009 तक 2,43,49,214/-(सिविल) + 26,18,351/-(इलेक्ट्रिकल) =2,69,67,565/- रु० व्यय किए जा चुके हैं ।

अब तक कार्य की प्रगति धीमी है जिसका मुख्य कारण, शेष कार्य के लिए पुनःनियुक्त वास्तु निर्माता मेंसर्स साहनी कन्सलटैण्ट प्राइवेट लिमिटेड एवं सी०पी०डब्ल्यू०डी० के बीच तालमेल की कमी का होना है। उपर्युक्त नियुक्ति तथा बकाया देय राशि के अदायगी से यह आशा की जाती है कि कार्य की प्रगति में तीव्रता आएगी।

यह सूचना प्राप्त हुई कि अग्निशामक यंत्रों का नेटवर्क 11, मानसिंह रोड स्थित भवन में लगा दिया गया है परन्तु उन्हें चालू नहीं किया गया है । चूंकि यह बहुत गंभीर मामला है, मेसर्स साहनी कन्सलटैण्ट प्राइवेट लिमिटेड को इस कार्य को अति महत्त्वपूर्ण कार्य के रूप में लेने को कहा गया है।

सी०वी०मेस भवन तथा 11, मानसिंह रोड के बीच एक परिवहन हेतु रोड बनाना तय हुआ है और यह कार्य शीघ्र ही आरम्भ किया जाएगा।

2. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय बंगलूरू

दक्षिण भारत में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को एक शाखा खोलने की योजना के अन्तर्गत संस्कृति मंत्रालय ने 464.00 लाख रु० की स्वीकृति दी। इसके लिए बैंगलोर में मुख्य भवन, शयनकक्ष एवं अतिथि गृह ब्लाक तथा संग्रहालय के निर्माण का कार्य आरम्भ कर दिया गया है। उपर्युक्त परियोजना हेतु आवश्यक कार्यवाई करने के पश्चात् 10 प्रतिशत सुपरविजन मूल्य के आधार पर एन०बी०सी०सी० को दे दिया गया है । 01 मार्च, 2003 को एक समझौते के पश्चात् वर्ष 2003 में कार्य आरम्भ कर दिया गया तथा राशि आवश्यकतानुसार समय-समय पर दी जाती रही है ।

अब तक एन०बी०सी०सी० को 415.55 लाख रु० की राशि दी जा चुकी है जिसमें से उपर्युक्त भवन निर्माण में 373.21 लाख रु० व्यय हो चुका है जिसका इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने सत्यापन भी कर दिया है। विस्तृत विवरण निम्नलिखित है :-

क्रम सं०	वर्णन	व्यय (रु० लाखों में)
1.	मुख्य भवन (95प्रतिशत कार्य पूर्ण हो गया)	340.43
2.	शयनकक्ष एवं अतिथि गृह (98 प्रतिशत पूर्ण)	
3.	संग्रहालय (90 प्रतिशत पूर्ण)	
4.	बाहरी विद्युतीकरण, ट्रांसफार्मर यू०जी०तार लगाना, पैनेल इत्यादि जिसमें बिजली के खम्बों का लगना सम्मिलित है। केवल बेसकोम द्वारा बिजली का कनेक्शन तथा केन्द्रीय परीक्षक द्वारा परीक्षण का कार्य शेष है।	
	कुल व्यय	**373.21**

एन०बी०सी०सी० के पास बकाया राशि 41.945 लाख रु०है जिससे गेट तथा सड़क बनाने में एवं रुकी हुई देनदारी में व्यय किया जाएगा।

निदेशक (अवैतनिक) एस०आर०सी० बैंगलूरू को 5.20 लाख रुपए का अनुदान शयनकक्ष एवं अतिथिगृह को सुसज्जित करने के लिए दिया गया जिसमें से उन्होंने, क्रय समिति के सदस्यों के परामर्श से मूल आवश्यक वस्तुओं का क्रय किया । 31.03.2009 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के पास 464 लाख रुपए की अनुमोदित राशि में से 43.645 लाख रुपए की राशि शेष रह गई।

अतिथि गृह ब्लाक

इस क्षेत्र में दक्षता रखने वाले विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों के साथ सिलसिलेवार सभाओं के आयोजन तथा परामर्श के पश्चात् एक विस्तारपूर्ण संकल्पना पत्र तैयार किया जा रहा है । इसका मुख्य उद्देश्य इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में उपलब्ध वर्तमान सुविधाओं को छात्रवृत्ति, शोध, लोक-संस्कृति एवं व्यावसायिक का एक संगम-स्थल बनाना है । इसके लिए कार्यक्रमों का एक कैलेंडर बनाना होगा जिससे खान-पान शैली सम्मेलनों का आयोजन, सिनेमा इत्यादि जुड़े होंगे । यह पत्र अगली कार्यकारिणी में प्रस्तुत होगा ।

कंर्सट हाल

कंर्सट हाल के निर्माण के लिए इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के इ०एफ०सी० प्रारूप के उत्तर में संस्कृति मंत्रालय ने अपने प्रपत्र संख्या 16-26/2006 अकादमी दिनाङ्क 15 अप्रैल, 2006 को मंत्रालय के आई०एफ०प्रभाग के विचार प्रेषित किए हैं । केन्द्र में उनके उत्तर तैयार किए जा रहे हैं। कार्य में गति लाने के लिए मंत्रालय से भी प्रार्थना की जा रही है कि मीटिंग शीघ्र बुलाए ।

सी०वी०मेस भवन में प्रदर्शनी गैलरी

सी०पी०डब्ल्यू०डी० ने सी०वी०मेस भवन के भूतल भवन के अनुमोदित योजना के अनुसार सिविल कार्य के लिए 2,18,53000/-रु० का तथा इलेक्ट्रिकल कार्य के लिए 2,88,54,677/-रु० की संशोधित प्राक्कलन जमा किया है । क्योंकि मई, 2008 में पहले ही सिविल कार्य के लिए 67,50,000/- तथा इलेक्ट्रिकल कार्य के लिए 76,91,250/- को राशि दी जा चुकी है संशोधित प्रशासनिक अनुमोदन तथा वित्तीय मंजूरी दे दी गई है। साप्ताहिक समीक्षा सभा, नियमित रूप से आयोजित मीटिंग में सी०पी०डब्ल्यू०डी० के अधिकारी तथा मेमर्स ए०बी० डिजाइन हैविट कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड के अधिकारी भाग लेते हैं, नियमित रूप से आयोजित होती है जिससे कार्य की प्रगति पर ध्यान रहे। इस बात का प्रयास किया जा रहा है कि निर्माण कार्य नवम्बर, 2009 में पूर्ण हो जाए ।

कार्यकारिणी समिति ने अपनी पिछली मीटिंग में यह सुझाव दिया कि इस परियोजना को दो चरणों में बाँट दिया जाए तथा दूसरे चरण का कार्य सरकार की मंजूरी के पश्चात् ही किया जाए। इस बात का परीक्षण किया गया तथा यह निर्णय लिया गया कि क्योंकि सरकार इ०गा०रा०क०केन्द्र को अनुमोदित परियोजनाओं के लिए योजना अनुदान के रूप में राशि देती है केन्द्र को पूर्ण अधिकार है कि वह अपने अनुमोदित योजनाओं को पूर्ण करने के लिए दी गई राशि को अपनी स्वेच्छा से व्यय कर सकता है।

आर्ट गैलरियों के उपयोग तथा प्रबन्धन के लिए नियम बनाने के लिए कलाकारों तथा भागीदारों से परामर्श किया जा रहा है ।

अनुबन्ध-1

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

न्यासी मण्डल (31.3.2009)

1. **श्री चिन्मय आर० घारे खान** — **अध्यक्ष, इ०गा०रा०क०केन्द्र**
   सी-362, डिफेंस कॉलोनी,
   नई दिल्ली-110 024

2. **डॉ० (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन**
   85, एस०एफ०एस०,डी०डी०ए० फ्लैट्स
   गुलमोहर एन्क्लेव,
   नई दिल्ली-110 049

3. **श्री सलमान हैदर**
   ए-3, प्रथम तल,
   पूर्वी निजामुद्दीन,
   नई दिल्ली-110 011

4. **डॉ० रोदम नरसिम्हा**
   अध्यक्ष, इंजिनियरिंग मैकेनिक्स युनिट
   जवाहरलाल नेहरु अद्यतन वैज्ञानिक अनुसंधान केन्द्र
   जाकुर पी०ओ०, बैंगलोर 560 646

5. **प्रो० ए० रामचन्द्रन्**
   22, भारती कालोनी
   विकास मार्ग,
   नई दिल्ली 110 092

6. **डॉ० कान्ती बाजपेई**
   हैड मास्टर, द दून स्कूल माल रोड,
   देहरादून 248 001

7. **श्री अनिल बैजल**
ई-524, ग्रेटर क्लास
नई दिल्ली-110 048

8. **प्रो० यू०आर अनन्तामूर्त्ति**
नं० 498, सुरागी, एच०आई०जी० हाउस
आर०एम०वी० 2-स्टेज-6 ए मेन,
बैंगलूरू 560 094

9. **डॉ० पद्मा सुब्रह्मण्यम्**
अध्यक्ष, नृत्योदया एवं द प्रबन्ध न्यासी
भरतमुनि फाउंडेशन फॉर एशियन कल्चर
ओल्ड 6, फोर्थ मेन रोड
गाँधी नगर, चेन्नई-600 020

10. **डॉ० किरन मजुमदार शॉ**
बायोकॉन लिमिटेड
20 वा के०एम०होसूर रोड
बैंगलुरु 561 229

11. **श्री जवाहर सरकार**
सचिव, भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय, शास्त्री भवन
नई दिल्ली 110001

12. **प्रो० ज्योतीन्द्र जैन**
सदस्य सचिव, इ०गा०रा०क०केन्द्र
जनपथ, नई दिल्ली 110 001

अनुबन्ध-2

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

कार्यकारी समिति के सदस्यों की सूची(31.3.2009)

1 . **श्री चिन्मय आर० घारे खान** — **अध्यक्ष, इ०गा०रा०क०केन्द्र**
सी 362, डिफेन्स कालोनी,
नई दिल्ली- 1100 24

2. श्री सलमान हैदर
ए-3, प्रथम तल
पूर्वी निजामुद्दीन,
नई दिल्ली-110 003

3 डॉ. कान्ती बाजपेई
हैड मास्टर, द दून स्कूल
माल रोड, देहरादून 248 001

4. श्री अनिल बैजल
ई-524 ग्रेटर कैलाश,
नई दिल्ली 110 048

5. **प्रो० ज्योतीन्द्र जैन**
सदस्य सचिव, इ०गा०रा०क०केन्द्र
जनपथ, नई दिल्ली 110 001

अनुबन्ध -3.

1 अप्रैल, 2008 से 31 मार्च, 2009 तक इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आयोजित प्रदर्शनियों की सूची

1.	लोट्स सूत्रा : शान्ति एवं मानवता का सन्देश	17 से 23 अप्रैल, 2008
2.	दिल्ली : राइजिंग अबव रुइन्स् श्री रंजन कुमार सिंह के छाया चित्र	4 से 19 जून,2008
3.	जम्मू की चित्रकला के प्रसिद्ध कलाकार स्वर्गीय मास्टर संसार चन्द की कलाकृतियाँ	4 से 11 जुलाई, 2008
4.	युवा अफगानी महिला कलाकारों की कलाकृतियों की प्रदर्शनी	8 से 14 सितम्बर, 2008
5.	कौथिक, सेलिब्रेटिंग गढ़वाल	20 से 25 अक्तूबर, 2008
6.	हिस्ट्री इन द मेकिंग, इमेजेस फ्रॉम द कुलवन्त रॉय आर्काइव्ज़ श्री कुलवन्त रॉय की छायाचित्र	3 से 21 अक्तूबर, 2008
7.	इण्डियन आर्किटेक्चर थ्रू द लेंस ऑफ प्रो० एन०के०बोस	12 से 26 दिसम्बर, 2008
8.	अरब फाइन आर्ट एण्ड बुक्स	1 से 8 दिसम्बर, 2008
9.	लाइफ एण्ड एन्वायर्न्मेण्ट	28 से 1 जनवरी, 2008
10.	एनुअल आर्ट	1 से 8 दिसम्बर, 2008
11.	द मेंटल एटलस : आर्ट एण्ड कल्चर ऑफ नार्थ-ईस्ट	10 से 18 जनवरी, 2008
12.	बौद्धिज़्म बायो-कल्चरल डायवर्सिटी इन द नार्थ-ईस्ट	10 से 18 जनवरी, 2008
13.	हस्तलिपि : ए मल्टीमीडिया प्रजेन्टेशन ऑन मैन्यूस्क्रिप्ट्स फ्रॉम द नार्थ-ईस्ट	10 से 18 जनवरी, 2009
14.	विद्या: एन एग्ज़िबिशन ऑफ बुक्स ऑन द नार्थ-ईस्ट	10 से 18 जनवरी, 2009

15.	कश्मीरी संस्कृति	23 फरवरी से 2 मार्च, 2009
16.	जम्मू कश्मीर एवं लद्दाख की समसामयिक कला	23 फरवरी से 2 मार्च, 2009
17.	लद्दाख की जीवन शैली एवं मठ	23 फरवरी से 2 मार्च, 2009
18.	कश्मीर की देशीय वास्तुकला	23 फरवरी से 2 मार्च, 2009
19.	जम्मू एवं कश्मीर की पुस्तकें	23 फरवरी से 2 मार्च, 2009
20.	पाण्डुलिपि विरासत का डिजिटल फोटो प्रलेखन	23 फरवरी से 2 मार्च, 2009
21.	स्लोवाक कंटेम्प्रेरी ग्राफिक आर्ट	13 से 20 फरवरी, 2009
22.	इमेजेस ऑफ इण्डिया	14 से 19 मार्च, 2009
23.	श्रीमती रामिता भंडारी की कलाकृतियाँ एवं मूर्तिकलाएँ	24 से 29 मार्च, 2009

अनुबन्ध-4

1 अप्रैल, 2008 से 31 मार्च, 2009 तक इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आयोजित व्याख्यानों/प्रस्तुतियों/प्रदर्शनों की सूची

1.	गाजन ऑफ बंगाल पर श्री देबाशीष सरकार द्वारा व्याख्यान एवं प्रस्तुति	16 मई, 2008
2.	गौडीया नृत्य पर डॉ० महुआ मुखर्जी द्वारा व्याख्यान एवं प्रस्तुति	16 मई, 2008
3.	*फोटोग्राफी कम्स टू इण्डिया* पर प्रो० क्रिस्तोफर पिने द्वारा व्याख्यान	4 सितम्बर, 2008
4.	द वेदास : देयर लिट्रेचर्, रिचुअल एण्ड फिलॉसफी पर प्रो० जी०सी०त्रिपाठी का व्याख्यान	10 नवम्बर, 2008
5.	अरब साइंस एण्ड रिनेसॉन्स आर्ट एक्रॉस कल्चरल हिस्ट्री ऑफ द गेज़ पर प्रो० हांज़ बेल्टिंग द्वारा व्याख्यान	14 अक्तूबर, 2008
6.	*मैं इस्तांबुल हूँ* - नाटक (एनएसडी के सहयोग से)	14 अक्तूबर, 2008
7.	*सुनीति कुमार : इन सर्च ऑफ ए मेटाफोर* पर प्रो० उदय नारायण सिंह द्वारा सुनीति कुमार स्मारकीय व्याख्यान	17 नवम्बर, 2008
8.	रोमांटिक न्यूआन्स इन द पोएट्री ऑफ हब्बा खातून पर श्री बशीर अहमद बडगामी द्वारा व्याख्यान	28 नवम्बर, 2008
9.	हब्बा खातून पर एक फिल्म	28 नवम्बर, 2008
10.	श्रीमती गीता चन्द्रन द्वारा भरतनाट्यम प्रस्तुतिएकं सत् का प्रदर्शन	19 नवम्बर, 2008
11.	श्रीमती अनिता सिंघवी द्वारा सूफी संगीत	19 नवम्बर, 2008

12. *कॉन्स्पेट ऑफ स्पीच (वाक) इन वैदिक लिटरेचर्* प्रो० जी० सी० त्रिपाठी द्वारा व्याख्यान — 30 दिसम्बर, 2008

13. डॉटर्स ऑफ इण्डिया, प्रोफाइल ऑफ टवेन्टी विमेन इन द आर्ट्स ऑफ विलेज इण्डिया पर डॉ० स्फिन पी० हायलर द्वारा सचित्र चर्चा — 20 मार्च, 2009

कश्मीर उत्सव के दौरान विशेष व्याख्यान

14. कश्मीर संस्कृति के विकास की मौखिक परम्परा का योगदान प्रो० सी०एल०सप्रू — 24 फरवरी, 2009

15. पोसिब्लिटिज़ऑफ काश्मीर - श्री सिद्धार्थ काक — 24फरवरी, 2009

16. *डोगरी लिटरेचर एण्ड पोएट्री* - श्रीमती पद्मा सचदेवा — 26 फरवरी, 2009

17. अभिनवगुप्त एक पुर्नमूल्यांकन - प्रो० नवजीवन रस्तोगी — 27 फरवरी, 2009

18. मिस्टिक थॉट ऑफ कश्मीर - प्रो० एम०वाई०जाफर — 28 फरवरी, 2009

19. प्रेजेन्टेशन ऑफ कंटेम्प्रोरी आर्ट - श्री वीर मुंशी — 28 फरवरी, 2009

नार्थ-ईस्ट उत्सव के दौरान विशेष व्याख्यान

20. हिस्ट्री राइटिंग ऑन नार्थ-ईस्ट इंडिया : पीरियोडाईज़ेशन, वैराइटीज कन्सर्नस : डेविड सिमली — 13 जनवरी, 2009

21. आर्ट ऑफ द ब्रह्मपुत्र वैली : फॉर्मेटिव सेन्चुरीज़ : गौतम सेनगुप्ता — 14 जनवरी, 2009

22. राजश्री मेघ्याचन्द्रा एण्ड वैष्णविज़्म इन मणिपुर - अरिबम श्याम शर्मा — 15 जनवरी, 2009

23. वुमन दि नरेटिव्ज ऑफ लिटरेचर - ममंग देई — 16 जनवरी, 2009

24. राईज़ ऑफ द असमीज़ मिडल क्लास : क्वेस्ट फॉर नेशनल आइडेन्टिटी - राजन सैकिया — 17 जनवरी, 2009

तत्त्वबोध व्याख्यान

25. रिलेशन ऑफ ग्रामर एण्ड लिटरेचर विद स्पेशल रेफरेन्स टु कालिदास वर्क्स -विद्वान् एच०वी०नागराजा राव — 29 अप्रैल, 2008

26. जैन दर्शन में कला द्रव्य का स्वरूप -डॉ० धर्मचन्द जैन — 24 मई, 2008

27. मैथड्स एण्ड स्टेजिज़ ऑफ द प्रिज़र्वेशन ऑफ एशिएट इंडियन स्क्रिप्चरस : ओरल ट्रेडिशन - डॉ० आर०भारद्वाज — 7 जून, 2008

28. वैदिक रिच्युअल एण्ड इट्स सिंबोलिज़्म - प्रो० उषा चौधुरी — 5 जुलाई, 2008

29. रेअर मैन्युस्क्रिप्ट्स इन साउथ ईस्ट एशिया : रिसर्च, स्कोप एण्ड फ्यूचर - डॉ० अमरजीव लोचन — 29 अगस्त, 2008

30. सम ऑब्ज़रवेशन्स ऑन द क्रिटिकल रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ द टेक्स्ट ऑफ अभिज्ञानशाकुन्तलम् — 26 सितम्बर, 2008

31. रेअर एण्ड अनपब्लिश्ड् मैन्यूस्क्रिप्ट ऑन आयुर्वेद - डॉ० मदल मोहन पाधी — 31 अक्तूबर, 2008

32. रिसर्च ऑन कन्ज़र्वेशन ऑफ कल्चरल प्रापर्टी इन इण्डिया - डॉ० एम०वी०नायर — 28 नवम्बर, 2008

33. कॉन्सेप्ट ऑफ स्पीच इन वैदिक लिट्रेचर - प्रो० जी०सी०त्रिपाठी — 30 दिसम्बर, 2008

34. मैन्युस्क्रिप्ट रिसोर्सेज़ इन बराक वैली : एन ओवरव्यू - डॉ० अमलेन्दु भट्टाचार्जी — 28 जनवरी, 2009

35. अभिनवगुप्त, एक पुनर्मूल्यांकन - प्रो० नवजीवन रस्तोगी — 27 फरवरी, 2009

36. मैन्युस्क्रिप्ट्स इन द सर्विस ऑफ द कॉमन मैन -आर० सत्यानारायण — 27 मार्च, 2009

अनुबन्ध-5

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशनों की सूची

(1 अप्रैल, 2008 से 31 मार्च, 2009 तक)

पुस्तकें

1) ईश्वरसंहिता (पाँच खण्डों में, वैष्णव पाञ्चरात्र का एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ)
2) संगीतनारायण (दो खण्डों में, 17वीं शताब्दी का संगीत एवं नृत्य विषयक ग्रन्थ)
3) सरस्वतीकंठाभरणम् (तीन खण्डों में, भोजराज कृत अलंकारशास्त्रीय ग्रन्थ)
4) ऋग्वेद की आश्वलायनसंहिता (दो खण्डों में, सम्पूर्ण ग्रन्थ का विस्तृत एवं व्यवस्थित अध्ययन)
5) रूद्राध्याय (ऋग्वेद की शांखायन शाखा से सम्बन्धित वैदिक ग्रन्थ)
6) मंथानभैरवतन्त्र (तीन खण्डों में भूमिका)
7) एलिमेन्ट्स ऑफ बुद्धिस्ट आइकानॉग्राफी ऑफ ए०के० कुमारस्वामी ।
8) द लिंगराज टेम्पल ऑफ भुवनेश्वर : आर्ट एण्ड कल्चरल लिगेसी ।
9) शारदा एण्ड टाकरी एल्फाबेट्स-ऑरिजिन एण्ड डेवल्पमेंट ।
10) कल्चरल हिस्ट्री ऑफ उत्तराखण्ड ।

डी वी डी फिल्म्स

1. असम की रामकथा
2. मणिपुर की रामकथा
3. सिक्किम बौद्ध धर्म
4. द मल्टीफेरियस ट्राइबल कल्चर ऑफ त्रिपुरा
5. पश्चिम बंगाल की रामकथा
6. पंजाबी किस्सा- सस्सी पुन्नु
7. भीली रामकथा
8. राजस्थान की रामकथा लोक रामायण
9. पहाडिया : झारखण्ड का के वनवासी
10. गद्दी एवं सराज की रामकथा (हिमाचल प्रदेश)
11. वाराणसी के घाटों के दैवी उत्सव
12. थरिया चोफला (उत्तराखण्ड) मनसरका सीता मेला

13. द बोटमेन ऑफ काश्मीर – हांजी
14. पौड़ी गढ़वाल की रामलीला (उत्तराखण्ड)
15. बारलाज की रामकथा एवं संस्कार गीत (हिमाचल प्रदेश)
16. केसर सागार
17. काश्मीर का सूफी संगीत
18. पूर्वोत्तर भारत में रामकथा की लोकपरम्परा

अनुबन्ध-6

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की सूची

(31.3.2009 तक)

प्रो० ज्योतीन्द्र जैन	सदस्य सचिव

सदस्य सचिव सचिवालय

श्री जॉय कुरियाकोस	अवर सचिव

कलानिधि

1.	डॉ० आर०सी० गौड़	पुस्तकालयाध्यक्ष
2.	श्री राजेश कौल	नियन्त्रक (मीडिया एकक)
3.	डॉ० गौतम चटर्जी	रिसर्च एसोशिएट एवं लेखक
4.	श्री वीरेन्द्र बंगरू	प्रलेखन अधिकारी (स्लाइड्स)
5.	श्री मशोदा लाल	उप-निदेशक (सूत्रधार)
6.	श्री दिलीप कुमार राणा	अनुसंधान अधिकारी
7.	डॉ० कीर्त्तिकान्त शर्मा	अनुसंधान अधिकारी
8.	डॉ० कल्पना दास गुप्त	सलाहकार

कलाकोश

1.	प्रो० जी०सी०त्रिपाठी	प्रो० एवं विभागाध्यक्ष, कलाकोश
3.	डॉ० एन०डी०शर्मा	एसोशिएट प्रोफेसर
4.	डॉ० अद्वैतवादिनी कौल	सम्पादक
5.	डॉ० राधा बनर्जी	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
6.	डॉ० वी०एस० शुक्ल	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
7.	डॉ० बच्चन कुमार	अनुसंधान अधिकारी
8.	प्रो० मंसूरा हैदर	सलाहकार

वाराणसी कार्यालय

1.	प्रो० के०डी० त्रिपाठी	अवैतनिक समन्वयक
2.	डॉ० उर्मिला शर्मा	सलाहकार (शैक्षणिक)

जनपद-सम्पदा

1.	प्रो० बी०के० रॉय बर्मन	अवैतनिक सलाहकार
2.	डॉ० मौली कौशल	एसोशिएट प्रोफेसर
3.	डॉ० बंसीलाल मल्ला	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
4.	डॉ० रमाकर पन्त	अनुसंधान अधिकारी
5.	डॉ० जी०एल० बादाम	वरिष्ठ सलाहकार

कलादर्शन

1.	श्री सुरेश पिल्लै	सलाहकार (डायस्पोरा)

सूत्रधार

1.	श्रीमती अदिति मेहता (आई०ए०एस०)	संयुक्त निदेशक (प्रशासन)
2.	संजय कुमार ओझा (आईएफएस)	निदेशक (प्रशासन)
3.	श्री पी०झा	निदेशक (एम०एम०)
4.	श्रीमती नीलम गौतम	वरिष्ठ लेखाधिकारी
5.	श्रीमती मंगलम् स्वामिनाथन	उप-निदेशक (आई एण्ड पी आर)
6.	श्री टी० एलोशियस	सलाहकार

दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र , बैंगलोर

1.	प्रो० एस०सेतार	अवैतनिक निदेशक
2.	डॉ० जी० ज्ञानानन्द	सलाहकार
3.	श्री पी०वाई० राजेन्द्र	सलाहकार

नार्थ-ईस्ट क्षेत्रीय केन्द्र, गुवाहाटी

1.	प्रो० ए०सी० भगवती	अध्यक्ष एवं अवैतनिक समन्वायक

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

1.	पं० सातकड़ि मुखोपाध्याय	सलाहकार
2.	श्री के०के० गुप्त	सलाहकार

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला वरिष्ठ /कनिष्ठ अनुसंधान सहायक

कलाकोश

1. डॉ० सुजाता रेड्डी — कनिष्ठ अनुसंधान सहायक

वाराणसी कार्यालय

1. डॉ० रमा दुबे — कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता

क्षेत्रीय केन्द्र, बैंगलोर

1. डॉ० करुणा विजेन्द्र — अनुसंधान अध्येता

कलानिधि प्रभाग (माइक्रोफिल्म परियोजना जी०ओ०एम०एल०, चैन्नई)

1. डॉ० एस० सौन्द्राहंडिन — परियोजना समन्वायक
2. श्री जे० मोहन — वरिष्ठ अध्येता
3. श्री पी०पी०श्रीधर उपाध्याय — वरिष्ठ अध्येता
4. श्रीमती वी पर्वतम् — कनिष्ठ अध्येता

कलानिधि प्रभाग (माइक्रोफिल्म परियोजना आर०ओ०आर०आई०,अलवर)

1. डॉ० सर्वेश कुमार शर्मा — परियोजना समन्वायक
2. डॉ० (श्रीमती) रमा शर्मा — वरिष्ठ अध्येता
3. मैन्यूस्क्रिप्ट लिफ्टर